

भारतीय साहित्यक निर्माता

आरसी प्रसाद सिंह

मार्कण्डेय प्रवासी



आरसी प्रसाद सिंह

अस्तर पर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक राजसभाक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान् बुद्धक माय रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कए रहल छथि। हिनकालोकनिक नीचाँ मे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओइ व्याख्याकेँ लिपिबद्ध कह रहल छथि। भारत मे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्र-लिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुन कोण्डा, दोसर शताब्दी इ.

सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

आरसी प्रसाद सिंह

मार्कण्डेय प्रवासी



साहित्य अकादेमी

Arsi Prasad Singh : Monograph on Maithili writer by Markandeya Pravasi in Maithili. Sahitya Akademi, New Delhi (2005) Rs. 25.

प्रथम संस्करण : 2005

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवींद्र भवन, 35 फ 'िरोज शाह मार्ग, नई दिल्ली 110 001
विक्रय विभाग, स्वाति, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुंवई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंवई 400 014
जीवनतारा विल्डिग, चौथी मंजि ल, 23 ए /44 एक्स.,
डायमंड हार्वर रोड, कोलकाता 700 053
सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. वी. आर. आंवेडकर वीथी, वंगलौर 560 001

चेन्नई कार्यालय
मेन विल्डिंग, गुना विल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443(304)
अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नई 600 018

ISBN 81-260-2052-0

मूल्य : पचीस टाका

मुद्रक : विकास कम्प्यूटर एण्ड प्रिण्टर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032

विषयानुक्रम



प्राक्कथन

आरसी प्रसाद सिंह- सन दू-दू टा भाषाक विशालकाय साहित्य-सम्पदा सँ सम्पन्न कविक परिचय एक टा छोट विनिबंधात्मक पुस्तिका मे देब कतेक कठिन कार्य होइछ, तकर अनुभव हमरा एहि पोथीक लेखनक क्रम मे भेल अछि। कवि आरसी वस्तुत: भारतीय साहित्यक निर्माता छलाह आ मैथिली एवं हिन्दी मे हिनका द्वारा रचल गेल व्यापक साहित्य-संसार अनन्त काल धरि अगिला पीढ़ी केँ प्रेरणा प्रदान करैत रहत। ओ आजीवन एतेक लिखैत आ छपैत रहलाह कि कहब कठिन छल जे हाथ सँ लिखैत छथि अथवा मशीन सँ। यद्यपि एहि उत्तर छायावादी कविक कविताक मुख्य विषय प्रकृति आ प्रेम छल, मुदा सत्य तँ ई अछि जे हिनक लेखनी कोनो विषय केँ अस्पृश्य नहि बुझलक। मानवतावाद आ राष्ट्रवाद सेहो अन्त-अन्तधरि हिनक काव्य-रचनाक प्रमुख विषय बनल रहल। युवा वर्गक उत्साह-उमंग, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, आध्यात्मिक गौरव-बोध, मातृभाषा-प्रेम, मैथिली-आन्दोलन आदि विषय पर सेहो आरसी बाबू खूब लिखलनि। अपन कतेको कविता मे तँ ओ मिथिला केँ पौराणिक कालक गौरवशाली देश मानि क' एकर प्रशंसा एवं स्तुति कयलनि अछि। रौदी-दाही सेहो हिनक रचनाक विषय रहल अछि। मैथिली-हिन्दी भाषा मे हिनक पुस्तकक संख्या कम सँ कम सत्तरि अछि, जाहि मे कविताक अतिरिक्त कथा, बाल कविता, निबन्ध आदि सेहो अछि। हिन्दीक एक टा काव्य-संकलन *आरसी* मे हिनक सात सय छिआनवे आ *संचयिता* मे पाँच सय सैंतीस कविता संकलित अछि, जाहि सँ ई अनुमान कयल जा सकैछ जे हिनक रचना-संसारक फलक किंवा 'कैनवास' कतेक पैघ छनि।

मैथिली मे हिनक तीन टा काव्य-संकलन प्रकाशित अछि-*माटिकदीप*, *पूजाकफूल* आ *सूर्यमुखी*।

सूर्यमुखी काव्य-संग्रह पर हिनका साहित्य अकादेमीक पुरस्कार प्राप्त छनि। ई कालिदासक *मेघदूत* नामक पुस्तकक अनुवाद सेहो मैथिली मे कयने छलाह, जे आब सभ ठाम सुलभ नहि अछि। हिनक दू टा अप्रकाशित मैथिली

पोथी छनि-*विविधा* आ *कविता-संग्रह*। एहि दूनू पोथी मे की सभ छैक, तकर ज्ञान एकर प्रकाशनक बादे सम्भव छैक। हिन्दी मे हिनक अप्रकाशित पोथी सभक सूची बड़ पैघ अछि, जकरा विषय मे एखन किछु लिखब अथवा कहब अन्हारमे ढेप फेकब-जकाँ होयत।

आरसी बाबूक प्रकृति-प्रेमपरक अथवा फूल आदि पर लिखल गेल कविता सभ जतबे माधुर्यपूर्ण तथा कोमल भाव-बोधक अछि, हुनका द्वारा मैथिली-आन्दोलनक पक्ष मे अथवा देशक दुर्दशा पर लिखल गेल कविता ओतवे ओजपूर्ण अछि। भावना अथवा शृंगारिक रस-बोध एवं ओजपूर्ण वीरत्व-भाव एहि दुनू ध्रुवक मध्य मे कतहु करुणा अछि तँ कतहु भक्ति अथवा शान्त रस। आरसी बाबू स्वयं प्रसाद गुण सँ सम्पन्न व्यक्तित्वक कवि छलाह तेँ हुनक कृतित्वो मे प्रसाद-पुरस्सरता भेटैछ। वैह शालीनता, सरलता आ सहजता। हुनक भाषा-शैली, शब्द-विन्यास आदि मे सेहो अकृत्रिमता स्वतः झलकैछ। यत्र-तत्र अलंकार आ बिम्ब-विधान मे सेहो स्वाभाविक रूप सँ निष्प्रयास प्रकाश झलकैत भेटैछ।

एहि पोथी मे हम हिन्दी साहित्यक विकास मे हुनक योगदान केँ एकटा पृथक अध्याय मे समेटबाक प्रयास कयलहुँ अछि। आशा अछि जे मैथिलीक पाठकगण केँ आरसी बाबूक हिन्दी-सेवाक सम्बन्ध मे आवश्यक ज्ञान भेटि जयतनि। पुस्तक लिखबा मे हमरा सँ बहुत विलम्ब भेल अछि, ताहि लेल हम क्षमाप्रार्थी छी। आरसी बाबूक एरौत गाम मे हमर विवाह भेल छल आ ओ हमर श्वसुरक मित्रो छलथिन। आरसी बाबू सँ हमर बहुत नीक सम्बन्ध छल। हम आभारी छी साहित्य अकादेमी मे मैथिलीक पूर्व-प्रतिनिधि डाक्टर रामदेव झा जीक जे हमरा ई पोथीक लिखबाक अवसर देअओलनि आ ओहू सँ अधिक आभारी छी वर्त्तमान प्रतिनिधि पंडित चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' जीक जे अपन वरीयताक प्रभाव सँ हमरा सँ ई पोथी लिखबा लेलनि। जँ मैथिलीक पाठक लोकनि केँ हमरा द्वारा कयल गेल ई परिश्रम संतुष्ट क' सकतनि, तँ हम अपना केँ कृतार्थ बूझब।

पटना
31 मार्च, 2004

(मार्कण्डेय प्रवासी)

1

जीवन-वृत्त

मैथिली आ हिन्दीक लोकप्रिय कवि आरसी प्रसाद सिंहक जन्म उत्तर विहारक मिथिला क्षेत्रक समस्तीपुर जिलाक रोसड़ा रेलवे स्टेशन सँ आठ किलोमीटर उत्तर एरौत ग्राम मे माता गुलाब देवी आ पिता नारायण सिंहक प्रथम पुत्रक रूप मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी शनिवार, 19 अगस्त, 1911 ई० कें भेल छल। कहल जाइछ जे हिनक पूर्वज मुगल शासनक अत्याचार सँ तवाह भ' चारि शताब्दी पूर्व राजस्थानक चित्तौड़गढ़ सँ भागि क' मिथिला आयल छलथिन। इ सिसोदिया वंशक राजपूत छलाह, मुदा बदलैत परिस्थिति मे काकन क्षत्रिय कुलक कहबाबय लगलाह। शिक्षारम्भ गामेक प्राथमिक विद्यालय मे 1918 ई. मे सात वर्षक वयस मे भेल। आगूक शिक्षाक लेल हुनक नाम रोसड़ा मिडिल स्कूल मे लिखाओल गेल जतय सँ ओ 1925 ई० मे विशेष छात्रवृतिक संग मिडिल परीक्षा मे उत्तीर्ण भेलाह। आठम वर्ग मे हुनक नाम समस्तीपुर स्थिति किंग एडवर्ड हाइ स्कूल मे लिखाओल गेल, मुदा दुइये वर्ष बाद पिताक आकस्मिक मृत्युक कारण हुनक शिक्षा बाधित भ' गेलनि। बाद मे ओ अपन नाम दरभंगा स्थित नार्थ ब्रुक हाइ स्कूलमे दसम कक्षा मे लिखओलनि आ 1930 ई० मे प्रवेशिका परीक्षोत्तीर्ण भेलाह। ओ कतेको कालेज मे नाम लिखबैत रहलाह, मुदा हुनक चंचल कवि-मन कतहु टिकल नहि। अन्तत: निष्कर्ष ई निकलल जे भागलपुर स्थित टी० एन० जे० कॉलेज सँ ओ इंटर परीक्षाक लेल 'सेंट अप' भेलाक बादो परीक्षा नहि द' सकलाह। घुमंतू स्वभावक एहि कविक शिक्षाक यैह इतिवृत्ति अछि।

आरसी बाबू अर्थात् आरसी प्रसाद सिंहक नामक विषय मे कहल जाइछ जे हिनक असली नाम रामचन्द्र अथवा रमेश चन्द्र प्रसाद सिंह छल, जकर अंग्रेजी मे संक्षिप्त रूप आर. सी. होइछ आ एकरे बाद मे एक संग जोड़ि देने आरसी शब्द बनल। स्वयं कवि एहि तर्क कें निरर्थक मानैत छथि। हुनक

कहब छनि जे हुनक नाम मूल रूप सँ आरसी टा छलनि, रामचन्द्र अथवा रमेशचन्द्र नहिँ। स्कूल-कालेजोक अभिलेख सँ सेहो यैह प्रमाणित होइछ जे हुनक नामे आरसी छलनि, जकर अर्थ दर्पण होइछ।

साहित्यक प्रति रुचि आरसी बाबूक मन मे किशोरावस्थे सँ छलनि। मिडिल स्कूल धरि अबैत-अबैत ओ छोट-छोट पत्र-पत्रिका पढ़य लागल छलाह आ हाइ स्कूल मे पढ़ैत काल 1927 ई. मे दरभंगा सँ प्रकाशित *बालक* पत्रिका मे हुनक 'आम का पेड़' शीर्षक बाल कविता केवल सोलह वर्षक वयस मे छपि गेल छलनि। ओ कविता दोहा छन्द मे ब्रजभाषा-मिश्रित हिन्दीभाषा मे छल। दरभंगा मे हाइ स्कूलक विद्यार्थी-जीवन मे तँ ओ 'मेघ' शीर्षक एकटा कविता लिखिक' गोष्ठी मे सेहो सुनौने छलाह। ई उक्ति आरसी बाबूक सम्बन्ध मे सेहो शत-प्रतिशत चरितार्थ होइछ जे कवि मे जन्मजात काव्य-प्रतिभा होइछ। थोड़बे दिन मे ई ततेक लोकप्रिय भ' गेलाह जे सभ ठाम हिनक चर्चा होमय लागल। हिनक कविता हिन्दी आ मैथिलीक प्रायः प्रत्येक पत्र-पत्रिका मे छपय लागल।

ओ समय खड़ी बोलीक विकासक समय छल आ छायावादी कविताक लहरि चलि रहल छलैक। प्रकृति, प्रेम आ यौवनक भावना पर आधारित हिनक कविता हिनका एक टा पैघ उत्तर-छायावादी कविक रूपमे प्रकट कयलक, ओना राष्ट्रवाद अन्तधरि हिनक कविताक मुख्य विषय बनल रहल।

हिनक प्रथम विवाह 1929 ई० मे तत्कालीन मुजफ्फरपुर जिलाक (आब वैशाली जिलाक) देसरी प्रखंडक खोक्सा बुजुर्ग गामक निवासी हलधर सिंहक पुत्री कैलाश देवीक संग भेल छल आ दोसर विवाह समस्तीपुर जिलाक छकनटोली गामक भागवत सिंहक पुत्री सावित्री देवीक संग 1939 ई० मे भेल। हिनक दू टा पुत्रीक नाम उर्मिला आ सुनीता तथा एकमात्र पुत्रक नाम अशोक कुमार सिंह छनि।

आरसी जी भने छात्र-जीवन मे अनेक विश्वविद्यालयमे नाम लिखओलनि, मुदा हुनक मन कतहु नहि लगलनि। तहिना, हुनक स्वच्छन्द मन सेहो कोनो नोकरी मे नहि लगलनि। देशक स्वतंत्रताक बाद हुनक काव्य-प्रतिभाक सम्मान करैत हुनका कोशी कालेज, खगड़ियाक हिन्दी प्राध्यापकक पद पर। अप्रैल, 1948 ई० केँ कार्य-भार ग्रहण कराओल गेल, मुदा बेसी दिन धरि एहि पद पर रहब हुनका रुचि नहि सकलनि आ ओ तीन साल बाद 30 अप्रैल, 1951 ई० केँ पदत्याग क' अपन गाम आबि गेलाह।

तहिना, जखन ओ शान्ति तथा आनंन्द-लाभक लेल पाण्डिचेरीक अरविन्द आश्रम मे छलाह तखनहि हुनक नियुक्ति आकाशवाणी-केन्द्र, इलाहाबादक

हिन्दी कार्यक्रमक निदेशक किंवा प्रोड्यूसरक पद पर भ' गेलनि आ ओ 15 नवम्बर 1956 ई० केँ ई कार्य-भार ग्रहण कयलनि। एक साल बाद हुनक स्थानान्तरण आकाशवाणी केन्द्र, लखनऊ मे भ' गेलनि। ओ लखनऊ गेलाह तँ, मुदा किछुए दिन मे हुनका लगलनि जे सरकारी अधिकारीक पद पर रहि ओ मनोवांछित ढंग सँ कविता नहि लिखि सकताह। परिणाम ई भेल जे फरवरी, 1958 ई. मे ओ एहू नोकरीकेँ त्याग-पत्र द' क' छोड़ि देलनि। ई आकाशवाणीक उदारता छल जे त्याग-पत्रक बादो हुनका सेवामुक्त गीतकारक रूपमे मासिक अनुबंध पर राखल गेल। 1965 ई० मे ओ एहू सुविधा केँ त्यागि देलनि।

ई लेखन-कर्म मे मस्त कविक मनमौजियेपन छल जे आरसी बाबू आकाशवाणीक चाकरी छोड़लाक बादो किछु दिन धरि लखनउए रहलाह आ फेर गाम घूमि अयलाह। कविता लिखबाक ऋषि-कार्य मे लागल व्यक्तिक मन कतहु गाम मे कृषि-कार्य मे लागओ! 10 जून, 1965 ई. मे द्वितीय पत्नी आ 25 नवम्बर, 1971 ई. मे जेठकी पत्नीक निधनक बाद आरसी जी पूर्ण विरक्ति-भाव सँ गाम सँ विदा भ' पटना मे आबि क' रहय रहलाह।

एहि बेरक पटना-प्रवास तावत धरि लगातार चलैत रहलनि जावत धरि कविवर आरसी प्रसाद सिंह जीवित रहलाह। बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद्, बिहार सरकारक राजभाषा विभाग, मैथिली अकादमी एवं चेतना-समिति द्वारा हुनका पुरस्कृत कयल गेल आ साहित्य अकादेमी पुरस्कार सेहो हिनका मैथिलीक *सूर्यमुखी* काव्य-संग्रह पर भेटलनि। मैथिली आ हिन्दीक लेल 15 नवम्बर, 1996 ई० एक टा उदास दिन छल, जहिया आरसी बाबूक निधन भ' गेल आ बिहारक राजधानी पटना मे सरकारी सम्मानक संग हुनक अन्तिम संस्कार कयल गेल।

□

2

मैथिली कविता कें आरसी प्रसाद सिंहक अवदान

मातृभाषा मैथिली आ अपन मिथिला-भूमिक परम अनुरागी कवि आरसी प्रसाद सिंह प्राय: पचीस वर्षक वयस धरि राष्ट्रभाषा हिन्दी मे अपन कलमक चमत्कार देखबैत रहलाक बाद 1936 ई० मे मैथिली मे लिखब प्रारम्भ कयलनि। हुनक पहिल मैथिली गीतक शीर्षक छल 'शेफालिका', जे हुनक प्रथम काव्य-संकलन *माटिकदीप* मे संगृहीत भेल। अपन एहि पहिले गीतक माध्यम सँ मैथिलीक पाठक-समुदाय तथा विद्वज्जनक मध्य ओ बहुत लोकप्रिय भ' गेलाह, जाहि कारण हुनका मैथिली मे लिखैत रहबाक प्रेरणा भेटलनि। स्वयं कविक कहब छनि जे मैथिली मे लिखबाक प्रेरणा हुनका डॉक्टर अमरनाथ झा, भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' आ सुरेन्द्र झा सुमन सँ प्राप्त भेल छलनि। गीत-भूमि मिथिलाक एहि कविक मन-प्राण मे मिथिला-मैथिलीक प्रति केहन प्रेमोद्‌गार छनि, तकर प्रकटीकरण हुनक 'स्वदेश' शीर्षक कविता सँ स्वत: होइछ :

शुक-पिक सुरवाणी उच्चारय,
दास - दासियो वेद विचारय।
कण-कण जतय ज्ञान - चर्चा मे-
शंकर ब्रह्मे कें ललकारय।
कमला आँगन - भवन बहारथि,
लक्ष्मीपतिक दिगम्बर भेस!
धन्य - धन्य ई मिथिला देश !!

मैथिली मे आरसी बाबूक चारि टा पोथी छनि- प्रथम *माटिकदीप*, दोसर *पूजाकफूल*, तेसर *सूर्यमुखी* आ चारिम कालिदासक 'मेघदूत' (मैथिली मे पद्यानुवाद)। एकर अतिरिक्त विभिन्न पत्र-पत्रिका मे आरसी जीक असंख्य गीत

छपैत रहल अछि, जकर संग्रह करब शेष अछि। इतिहास प्रतीक्षा करत जे एहि सभ रचनाक संग्रह तथा पुस्तकाकार प्रकाशनक दायित्वक निर्वाह के करैत अछि। तहिना आकाशवाणी सँ हुनक कतेको संगीत रूपक प्रसारित भेल छल, जकर संग्रह होयबाक चाही।

कविक प्रथम काव्य-संग्रह *माटिकदीप* केर प्रकाशन 1958 ई० मे भेल छल। *पूजाकफूल* नामक पोथी 1967 ई० मे आ *सूर्यमुखी* 1982 ई. मे छपल। *पूजाकफूल* नामक पोथी मे प्रकृति-गीत तथा सौन्दर्य-गीत सभक अतिरिक्त मिथिला-मैथिलीक प्रशंसा तथा राष्ट्र-भावना सँ परिपूर्ण कविता सभ अछि। हुनक राष्ट्र-भावनाक परिचय करबय लेल *पूजाकफूल* नामक पोथीक ई गीत द्रष्टव्य अछि-

स्वाधीनता हमर अछि, अधिकार जन्मजाते
के दस्यु ल' सकै अछि एकरा उधार खाते
हम ऐक्य-सूत्र बान्हल जन कोटि-कोटि वासी-
युग आइ रचि रहल छी, नव सर्जना करै' छी!
हे जन्मभूमि भारत, हम वन्दना करै' छी!!

एहि पोथीक 'अधिकार' शीर्षक कविता मे हिनक मातृभाषा मैथिलीक प्रति प्रेमक तरंग अछि। मैथिली-सन अति प्राचीन साहित्यिक भाषाक प्रति भ' रहल अन्यायक विरुद्ध युद्धक मुद्रा मे अपन लेखनी केँ तरुआरि बनबैत ई लिखलनि अछि-

बैसि कंठ पर क्यो बलजोरी
स्वर नहि दाबि सकै' अछि।
मूँग दरड़ि सदिखन छाती पर-
मुँह नहि जाबि सकै' अछि।।
लेब अपन अधिकार आब हम-
अपन महालक पानी।
माङि रहल छी प्रथम आइ हम-
अपन मातृजन - वाणी।।

(*माटिकदीप*)

एतबे नहि, मातृभाषा केँ उचित सम्मान देअयबाक लेल कवि युद्ध-पर्यन्तक कल्पना करैत छथि आ बिगुल बजयबाक प्रयास करैत छथि-

बाजि गेल रनडंक, डंक ललकारि रहल अछि
गरजि-गरजि क 'जन-जन कें परचारि रहल अछि
कोशी-कमला उमड़ि रहल, कल्लोल करै' अछि
के रोकत ई बाढ़ि, ककर सामर्थ्य अड़ै' अछि
चलि ने सकै' अछि आब सवारी हौदा कसि क'!
ई अदराक मेघ नहि मानत, रहत बरसि क'!!

मैथिली कें सम्मान प्राप्त करयबाक लेल आरसी बाबूक कवि चित्तौड़ गढ़क महाराणा प्रतापक रण-भूमि मे कूदल लगैत छथि आ वीर रसक उत्तम कविता लिखने छथि-

आबहु की रहतीह मैथिली बनलि वन्दिनी?
तरुक छाँह मे बनि उदासिनी जनकनन्दिनी?
बाजि गेल अछि डंक, लंक मे आगि लगल अछि।
अभिनव विद्यापतिक भवानी जागि रहल अछि।।

एहि उद्धरण मे लगैत अछि जे कवि आरसी बाबू प्रकारान्तर सँ स्वयं कें अभिनव विद्यापति कहैत छथि। वस्तुतः जहिना विद्यापति कें अभिनव जयदेव कहल जाइछ तहिना हिनका जँ अभिनव विद्यापति कहल जाय तँ, कोनो अत्युक्ति नहि होयत। विद्यापति जाहि प्रकारेँ अपन *कीर्तिलता* नामक अवहट्टक पोथी मे तत्कालीन विदेशी शासकक अत्याचारक वर्णन कयने छथि, तहिना आरसी जी सेहो अपन कविता मे स्वतंत्र भारतोक नेता लोकनिक चरित्र एवं सामाजिक विकृति पर व्यंग्य करैत लिखने छथि-

पुण्य बनल अछि चोर बजारी,
सेठ भेल शठ, चोर जुआड़ी,
टीक कटौने भरिसक दमड़ी-
झा चामक व्यापार करै' अछि!
कलि कौतुक-विस्तार करै' अछि!!

* * * * * * * * *

निष्फल शास्त्र-पुरानक चर्चा
नीक नाच-रंगक बट-खर्चा
लाड़ि-चारि एकहि लड़ना सँ-
सभ किछु बंटाधार करै' अछि!
कलि कौतुक-विस्तार करै' अछि!!

(माटिकदीप)

विद्यापतिक ऊधो-माधव-शैली मे सेहो कवि विमान-विहारी नेता लोकनिक विदेश-यात्रा पर व्यंग्यक बाण छोड़ैत देशक दाही-रौदीक समस्याक चित्रण करैत दारुण शैली मे लिखने छथि-

हे ऊधो, माधो सँ कहबनि, अपने गेला विदेश !
हमरा ले' द' गेला एतय ई भूखमरीक कलेश !!
एको बुन्न अखार न बरिसल, साओन आयल बाढ़ि !
चूल्हिक पूता पानि चढ़ल अछि, माय कनै छथि ठाढ़ि !!

(*माटिकदीप*)

आरसी बाबू आधुनिक युगक कवि रहितहु विद्यापतियेक शैली मे राधा-कृष्णक गीत-परम्परा मे लिखने छथि-

माधव-माधव रटि-रटि राधा भ' गेल माधव-रूप !
राधा-राधा करइत अनुखन वन-वन फिरथि अनूप !!
माधव, अहँ छी केहन कठोर !
हृदय वज्र-सन भेल अहाँ केर-
पाथर पसिझय नोर !!

मैथिलीक आरसी बाबू जहिना सामाजिक-राजनीतिक विद्रूपक विरुद्ध वीर रसक कविता लिखबा मे निपुण छथि, तहिना हिनक कोमल-कान्त गीत सभक कोमल-मध्यम-गांधार सुरक सरगम सम पर बजैत लगैछ। *माटिकदीप* नामक काव्य-संग्रहक एक टा गीतक वासन्ती वातावरण कें रूपक अलंकार मे बन्हैत आ विलक्षण बिम्ब प्रस्तुत करैत ओ लिखलनि अछि-

नित्य विहगावलि प्रभातहिँ-
उठि हमर मृदु विरुद गाबय,
आबि दक्षिण देश सँ-
पावन पवन हमरा जगाबय !
चकित - विस्मित चौंकि जहिना-
आँखि खुलि जाइछ हमर कल-
बान्हि किरणक पार सँ-
नूतन तरणि हमरा जगाबय !!

आरसी बाबूक अभिनव विद्यापतित्व कें प्रमाणित करबाक लेल विद्यापतियेक 'माधव हम परिणाम निराशा' वाला गीतक नैराश्य-भाव-बोधक किछु पाँती *माटिकदीप* मे एहि प्रकारें अछि-

काल-स्रोत मे कमल-फूल सम
जीवन भासल जाय।
रस-समुद्र मे यद्यपि डूबल-
प्राण पिआसल जाय॥

आरसी बाबू उत्तर छायावादी युगक कवि छथि, तेँ हिनक कविता मे ठाम-ठाम पर नवीनताक आग्रह परिदर्शित होइत रहैछ। नूतन कथ्य, नूतन शिल्प, नूतन शैली आ नूतन आचार-विचारक लेल हिनक कवि-मन कतेक आकुल अछि, तकर दृष्टांत *माटिकदीप* काव्य-संकलनक एहि पाँती सभ मे ताकल जा सकैत अछि-

नवीन युग, नवीन जग, नवीन मुक्ति-बालिका
स्वतंत्र देश मे खिलल नवीन दीप-मालिका
कि जगमगा रहल गगन, प्रदीप सँ भरल भवन
कि दिगदिगन्त सँ मधुर उतरि रहल अरुण किरण

माटिकदीप आरसी बाबूक उनतीस टा कविताक संकलन थिकनि। एहि संकलनक कविता सभ अपन स्पष्टता, सहजता, सम्प्रेषणीयता, सरसता, मधुरता आ विसंगतिक विरुद्ध संघर्षक आतुरताक कारण आरसी बाबू केँ हिन्दीये-जकाँ मैथिली मे सेहो नीक-जकाँ स्थापित क' देलकनि। ई जे किछु लिखलनि सधल कलम सँ लिखलनि आ अपन आरसीत्वपूर्णताक परिचय देलनि। आरसी बाबू अपन मिथिलाक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक गौरव-बोध पर मुग्ध होइत अहोभावक संग लिखने छथि-

धन्य-धन्य ई मिथिला देश!
दक्षिण पवन डोलावय चामरि
मंगल-गीत सुनाबय सामरि
बम-बम करइत भक्त जन विचरथि
गंगाजल सँ भरि-भरि कामरि
सजल शस्य श्यामल धरती पर-
अमृतक वर्षा हरय कलेश!
धन्य-धन्य ई मिथिला देश!!

मातृभाषा मैथिलीक माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा आ संविधानक आठम अनुसूची मे मैथिलीक स्थान आदिक लेल आन्दोलनक काल मे आरसी बाबू वहुत रास उत्साहवर्द्धक कविता लिखलनि। किछु पाँती द्रष्टव्य अछि-

कोशी-कमला उमड़ि रहल, कल्लोल करै' अछि !
के रोकत ई बाढ़ि, ककर सामर्थ्य बढ़ै' अछि !!
स्वर्ग-देवता क्षुब्ध, राज-सिंहासन डोलै !
मत्त भेल गजराज पीठ लागल अछि झोलै !!
आबहु की रहतीह मैथिली बनल बन्दिनी !
तरुक छाँह मे बनि उदासिनी जनक-नन्दिनी !!

आरसी बाबू केँ बूझल छनि जे मिथिलाक गौरवपूर्ण इतिहास रहलैक अछि आ तेँ ओ मिथिला केँ स्वदेश मानि क' एकर प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरुदावली गबैत लिखने छथि-

बाड़ी-झाड़ी लतरल पान
पोखरि-पोखरि फुटल मखान ।
राह-बाट मे गुंजित होइछ-
विद्यापतिक मनोहर गान ।।
गाम-गाम मे धर्म-धुरंधर-
पढ़थि-पढ़ाबथि मीन कि मेष !
धन्य-धन्य ई मिथिला देश !!

मिथिलाक गरीबी तथा दैन्य-भाव पर तरसैत व्यंग्यक शैली मे सेहो ई किछु कविता लिखने छथि अपन *माटिकदीप* नामक काव्य-संकलन मे, यथा-

चीनीक तँ दर्शने ने
चाह मे पड़ैछ नोन !
चूड़ो धरि जँ भेटि जाय-
दहीक गप्प कोन !!
* * * * * * * * *
बूढ़ भेल बकरी हुराड़सँ ठट्ठा !
बुड़िबक विद्यार्थी केँ भरि सूप भट्ठा !!

पूजाकफूल कवि आरसी प्रसाद सिंहक कविताक दोसर संकलन थिकनि, जाहि मे तीस गोट कविता संकलित अछि। अहू संग्रह मे ई प्रकृति-प्रेमी, सौन्दर्यवादी आ राष्ट्रवादी कविक रूप मे प्रकट भेल छथि। स्वदेशक वन्दनाक मुद्रा मे लिखल गेल एक टा गीतक किछु पाँती ततेक मोहक अछि जे बेर-बेर पढ़बाक हेतु विवश क' दैछ-

कश्मीर अछि हमर ओ कैलास मानसर ओ,
ककरो कि द' सकै' छी अप्पन बनौल घर ओ,
जे शत्रु बनि अबै अछि स्वागत सहर्ष तकरो,
तरुआरि सँ समर मे हम घोषणा करै' छी!
हे जन्मभूमि भारत, हम वन्दना करै' छी!!

एहि संकलनक प्रारंभ *पूजाकफूल* शीर्षक कविता सँ भेल अछि। कवि पूजाक फूलक महिमाक गान करैत एकर महत्ता पर प्रकाश देलनि अछि। कविक अनुसार पूजाक फूलक महत्त्व कोनो राजभवनक विलास मे उपयुक्त होमय वला फूल सँ अधिक होइछ। कविक अनुसार-

फूल ई ने बनि सकै अछि रूपसी-अनुरूप माला!
की सुशोभित भ' सकै अछि केश कोनो देव-बाला?
की बनत कोनो विलासी राजभवनक शयन-सौरभ?
की झड़त वन-कुसुम ई एकान्त मे सुर-लोक दुर्लभ?
की बनत निर्माल्य ई सौभाग्य-सुरभित जागरण सँ?
फूल छी पूजाक आनल लोढ़ि क' तरु-कल्प-वन सँ?

एही संग्रहक एकटा रचना मे कवि बड़ मार्मिक ढंग सँ विरही मनक प्रतीक्षाक दर्द कें व्यक्त कयलनि अछि। प्रिय-मिलनक हेतु प्रेमीक मन-प्राण मे केहन कछमछाहटि रहैछ, से अनुभवेक विषय अछि। द्रष्टव्य अछि-

दीप जरैत रहि गेल राति भरि,
सगुन उचारैत राति भरि,
हम रहि गेलहुँ आँखि सँ अपनेक-
राहि बहारैत राति भरि।

राति भरि ककरो प्रतीक्षा मे बाट बहारैत रहबा मे कतेक अर्थवत्ता छैक, से खाहे तँ कोनो कवि कहि सकैत अछि अथवा रहस्यवादी दार्शनिके। ई बतहपनी नहि भ' क' एहन एकान्तनिष्ठताक प्रतीक अछि जे प्रतीक्षातुर व्यक्तिक आँखिसँ निन्न लूझि क' भागि जाइछ। कविकें गर्व छनि जे ओ मिथिलावासी छथि आ तें कहैत छथि-

ब्रह्मचर्य-पालन-तत्पर हम छी मिथिलावासी!
विद्योपार्जन हेतु जाइत छी, तीर्थराज-काशी!!

पूजाकफूल नामक काव्य-संग्रह मे सेहो कवि आरसी मानवीय मूल्यक लेल समर्पित लगैत छथि। देश-प्रेम, प्रकृति-प्रेम तथा मिथिला-मैथिलीक प्रति

प्रेमक अतिरिक्त मानवताक प्रति प्रेम-उद्‌गार एहि संग्रहक कविता सभ मे ठाम-ठाम प्रकट भेल अछि। संग्रहक अन्तिम कविताक शीर्षक अछि 'जीवन' जाहि मे कवि कर्मठताक पाठ पढ़बैत लगैत छथि। हुनक कहब छनि जे-

मानवक संसार मे खाहे समस्या जे विकट हो
किन्तु जीवन तँ सदा आनन्द उच्छल स्वर भरल हो
जड़-विशेषक दृष्टि सँ अभिनाश खाहे सन्निकट हो
किन्तु यौवन तँ नवल किछु सृष्टि-रचना मे पड़ल हो
रक्त मे जे उष्णता, उत्साह कोनो कर्म मे अछि
तेज वाणी मे नयन मे दीप्ति जे विद्युत् बनल अछि
पुरुष मे पौरुष बनल, नारीत्व नारी मे कहाबय
धर्म प्राणक जे अचल, से वैह जीवन-कण अनल अछि

पूजाकफूल मे प्रकृति आ ऋतु पर आधारित गीतक प्राचुर्य सेहो अछि। वर्षा ऋतुक एकटा गीत मे विद्यापतिक गीत-शैलीक आधुनिकीकरण करैत आरसी जी लिखने छथि-

मेघ पड़ै छै, बुन्न झड़ै, छै,
नाचै छै मन-मोर रे!
कोन प्रिया केर काजर-आँखि मे-
आइ भरल छै नोर रे!
आबि रहल छै झिहिर-झिहिर-
मधु-मातल सरस बसात रे!
काँपि रहल छै सिहिर-सिहिर-
हरिआयल आमक पात रे!!
जकर कन्त भेल चान, कनै छै-
तकर हियाक चकोर रे!
मेघ पड़ै छै, बुन्न झड़ै छै,
नाचै छै मन-मोर रे!

सूर्यमुखी आरसी बाबूक तेसर काव्य-संकलन थिकनि, जकर प्रकाशन मैथिली अकादमी, पटना द्वारा भेल अछि। एहि मे शीर्षक-उपशीर्षक-सहित कुल अंठानवे टा कविता संगृहीत अछि। एहि पुस्तकक 'प्रवेशिका' शीर्षक भूमिका मे आरसी बाबू विलम्ब सँ मैथिली मे लिखब प्रारंभ करबाक स्पष्टीकरण दैत लिखलथिन अछि जे-'हम हिन्दी सँ मैथिलीमे आयल छी। एखनो मैथिलीक

संग हिन्दीओक विपुल रचना-विरचना चलैत रहै' अछि। हमरा छात्रावस्था मे पढाओल गेल छल जे विद्यापति हिन्दीक कवि छलाह। तखन हम विद्यापति केर पद-लालित्यक सौष्ठव हिन्दीए मे पबैत छलहुँ। रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा सम्पादित *विद्यापतिपदावली* पर मुग्ध भेल छलहुँ। श्री भोला लाल दास एवं कुशेश्वर कुमार द्वारा सम्पादित *मिथिलाक* पाठक छलहुँ, मुदा भावना यैह छल जे मैथिली कोनो स्वतंत्र भाषा नहि-हिन्दीएक एकटा बोली मात्र अछि, जेना मगही, भोजपुरी, ब्रजभाषा, अवधी, बुंदेलखंडी आदि। मुदा, एक दिन ज्ञान झाक योग सँ ई आभास होयबा मे कोनो दुविधा नञि भेल जे मैथिलीक अपन स्वतंत्र अस्तित्व छैक आ ओकर अपन इतिहास एवं साहित्य-परम्परा छै। ई तँ वैह बात भेल जे हम एक टा कथाक माध्यम सँ नीक-जकाँ कह' चाहैत छी। कोनो राजाक रानी सँ एक टा बड़ सुन्दर कन्या जन्म लेलकै, मुदा जेँ कि ओकर जन्म मूल नक्षत्र मे भेल छलैक, तेँ पंडित लोकनिक विचार सँ ओकरा कोनो नदीक धार मे काठक मंजूषा मे बन्न क' प्रवाहित क' देल गेलैक। संयोग सँ भसिआइत-भसिआइत ओ कन्या कोनो दूर-दराजमे एहन घाट सँ लागि गेली जाहि ठाम एकटा धोबी कपड़ा मे साबुन लगा क' फीचि रहल छल। ओ जहिना पओलक काठक मंजूषा, तहिना कोनो अशर्फी-मोहरक लोभेँ झट खोलि क' देखलक, तँ आखिक बीझ छूटि गेलै, देखि क' एक टा दिव्य कन्या। स्वर्गक परी-सन सुन्नर! मनोहर कांति! आ मंजूषामे ओहि कन्याक चारू कात सोनाक गहना आ चानीक रुपैयाक अंबार लागल। धोबीक तँ ई सभ देखि क' आँखि चोन्हिया गेलै'। आब ओ कथी ले' कपड़ा मे साबुन लगायत? कन्या सहित ओहि मंजूषा केँ माथ पर ल' भागल-भागल घर आयल आ ओहि कन्याकेँ देव-कन्या जकाँ पोस' लागल। ओहि कन्याक धन सँ एके दिनमे धोबीक दरिद्रा पार भ' गेलै' आ हँसी-खुशी सँ जीवन बितब' लागल। लोक पड़ोस मे ओहि कन्याकेँ धोबिएक बेटी बुझैत छलै आ धोबियो एहि बातक प्रचार कयने छल! किन्तु, कालान्तर मे जखन ओ कन्या बढ़ि क' जुआन भेली आ हुनक रूप, शील स्वभावक चर्चा चारू दिस गुलाबक फूल-जकाँ गमक' लागल तँ कोनो राजाक अलबेला बेटा एक दिन आयल आ कन्या केँ दखिते ओकर लक्षण सँ झट चीन्हि लेलक जे ई तँ राजकन्ये भ' सकैत अछि- धोबीक बेटी नहि। आ ई बुझिते ओ ओहि कन्याकेँ बाँहि पकड़ि क' उठौलक आ घोड़ा पर चढ़ा क' अपन राजधानी मे ल' अनलक, जतय ओकरा सँ विधिपूर्वक विवाह रचा'क अपन राजरानी बना लेलक। मैथिलीक सम्बन्धमे हमरा जे अभिज्ञान भेल, तकर अनुमान एहि कथाक प्रसंगसँ कयल जा

सकै अछि। नहि तँ महाकवि कालिदासक नाटक *अभिज्ञानशाकुन्तलम्* मे वर्णित ओहि मर्मस्पर्शी घटना सँ, जत' शकुंतलाक आँगुरमे अपने हाथ सँ पहिराओल अंगूठीकेँ बिसरि, पुन: मन पड़बाक कारणेँ चीन्हि क' राजा दुष्यंत हर्षोत्फुल्ल भ' जाइत छथि। एहने कोनो सुअवसर पर स्वर्गीय अमरनाथ झाक साहसिक उद्‌गार पढ़' ले' भेटल छल, जाहिमे ओ अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलनक मंच सँ अपन अध्यक्षीय भाषण मे निर्भीकतापूर्वक बाजल छलाह जे मैथिली हमर मातृभाषा अछि आ हिन्दी राष्ट्रभाषा। तखन हमरा बूझ' मे फेर कोनो ततमत नहिँ रहल जे दूनू भाषामे कोनो तात्त्विक विरोध नहि छै। दूनू एके धरती आ माटि-पानिक उपजा छै। आ दूनूक अपन स्वतंत्र अस्तित्व, स्थान आ साहित्य छै। दूनूक सेवा संगे-संग चलि सकैत छैक।'

आरसी बाबूक एहि स्पष्टीकरण मे युगक सत्य बजैत अछि.। गुलामीक कारण एहि देश मे बहुत किछु बिगड़ि गेल अछि, स्वत्व सेहो। एही गुलामीक कारण मैथिली अपन विद्यापति केँ बिसरि गेल छल आ ई बंगला साहित्यक इतिहासक कवि मानल जाइत रहलाह। बाद मे स्वतंत्रता-आन्दोलनक दिन मे हिन्दी राष्ट्रभाषाक नारा प्रखरता पओलक तँ मैथिलीक विद्यापति हिन्दी काव्य-साहित्यक इतिहासक प्रथम पुरुष बनलाह। मैथिली केँ हिन्दीक बोली बलपूर्वक घोषित कयल जाइत रहल आ आरसी बाबू-सन कतेको मैथिली भाषा-भाषी कवि प्रारंभ मे मैथिलीक बदला मे हिन्दी मे लिखबाक हेतु प्रेरित होइत रहलाह। ई नीक बात अछि जे आब स्थिति बदलि रहल अछि आ कवि आरसी प्रसाद सिंहक मैथिली भाषाकेँ संविधानक आठम अनुसूची मे सेहो स्वतंत्र भाषाक रूप मे सम्मिलित क' लेल गेल अछि। कहि सकैत छी जे मैथिली भाषाक आन्दोलनक इतिहास मे आरसी बाबूक कविता सेहो महत्त्वपूर्ण योगदान कयलक अछि। आरसी बाबूक शब्दावली मे कहल जा सकैछ जे हुनक एहन कविता सभ 'सूर्योदयी चेतनाक कविता' थिकनि।

आरसी बाबू मैथिली काव्य-लेखनक क्षेत्र मे अपन 'शेफालिका' शीर्षक पहिल कविताक संग प्रवेश कयलनि आ अन्तधरि विभिन्न फूल पर जमिक' कविता लिखैत रहलाह। फूल सभ मे हुनका सत्य, शिव आ ब्रह्म सहोदर आनन्दक परम दार्शनिक अनुभव होइत रहलनि अछि। *सूर्यमुखी* नामक काव्य संग्रहक भूमिका मे ओ एहि तथ्यकेँ स्वीकार करैत लिखबो कयलनि अछि- 'शेफालिका' मे जँ हम सत्यक बोध पौलहुँ, तँ रजनी गंधा मे सौन्दर्यक आ *सूर्यमुखी* मे साक्षात् मंगल-मूर्त्तिक दर्शन क' जीवन कृतार्थ भेल।' अपन 'सूर्यमुखी' शीर्षक कविता मे ओ स्वयं सूर्यमुखी सँ कहैत छथिन-

कुसियारो मे जँ फल लगितय, तँ की नीक न होयतै ?
मुदा सुमति ई देतनि के निर्बंध-निरंकुश विधि कँ ?
सूर्यमुखी, तोँ गाबह मंगल, करह कृतार्थ जनम तोँ;
आलिंगन द' रहल केन्द्र-चैतन्य प्रकाश-परिधि कँ !

सूर्योदयी चेतनाक ई रससिद्ध कवि अपन 'उगैत सूर्य कें प्रणाम' शीर्षक कविता मे देशक जनता कें जगबैत लिखने छथि-

देल गेल नवल मंत्र,
नवल तंत्र, नवल सूत्र।
अपन योग-क्षेम लिअ'-
जागू हे भूमि-पुत्र।
बनब' ले' अछि स्वदेश पुण्य-भूमि, विश्व-धाम !
आउ, आइ हम करी उगैत सूर्य कँ प्रणाम !!

एहि गीत मे कंवि जनताकें संकेत दैत छथिन जे 'आमक तँ आम खाउ, आँठियोक लिअ दाम- चेतनाक लहरि उठल बोन-बाध गाम-गाम।' ई चेतना विकासक प्रकाशक चेतना अछि, आस्था-विश्वासक चेतना अछि। लगैछ जेना चेतनाक तरंग कविक चेतन मन कें उद्वेलित क' देने होइनि आ एकर विद्युत्तरंगमय मादक स्पर्श सँ हुनक अवचेतनो कें अलौकिक रूप सँ झनझना देने होइनि। आरसी कवि 'चेतना-तरंग' शीर्षक एहि संग्रहक कविता मे लिखबो कयलनि अछि-

छूबि गेल आइ कोन चेतना-तरंग ?
प्राण-प्राण मे सजीव भ' रहल उमंग !
** * * * * * * * **
आइ हाथ मे न हमर मन, अवश प्राण
पात-पात पर चढ़ल रूप-कुसुम-बाण
बूढ़ो बड़-पीपर भ' गेल अछि जुआन
रेशम-सन पहिर न'व पल्लव-परिधान
चहकि रहल डारि-डारि पर गुणी विहंग !
छूबि गेल आइ कोनो चेतना-तरंग !!

सौन्दर्य आ माधुर्य्यक चेतनाक एहन तरंग आरसीए बाबू-सन साहित्य-निर्माता कविक तन-मन हृदय-प्राण मे उठि सकैत अछि। आनन्दक एहने पराकाष्ठाक स्थिति मे मानवता देवत्वक शिखर दिस तीव्र गति मे ससरैत लगैत अछि आ

परमानन्दकेँ प्राप्त करैत अछि। एहन परमानन्दक स्थिति मे ने किछु विधेय बचैछ आ ने किछु निषेध। एहन मस्तीक स्थितिक चित्रण करैत कवि ठीके लिखलनि अछि जे-

अधरतिये चूबि रहल महुआ मधु-जोर।
अँजुरी भरि गाबि रहल चैती धुन भोर॥
कोइली कुहु-कुहुक बोल, पपिहा पी-शोर।
रक्त मे जुआड़ि रोम-रोम मे हिलोर॥
भासल जा रहल पयर कत' ककर संग!
छूबि गेल आइ कोन चेतना-तरंग!!

किछु एहने मदमस्तताक स्थिति मे कवि आरसी शरद ऋतुक कोनो प्रभात-वेला मे जखन हरसिंगारक पुष्पक सुगन्धक स्पर्श किंवा घ्राण-बोधक स्थिति मे अबैत छथि, तँ लिखैत छथि जे-

मोन हमर शरद-प्रात, प्राण हमर हरसिंगार!
झड़-झड़-झड़ झड़य सुमन, मँहमहँ-महँ-महँ बयार!!
मन्द-मदन मलय पवन
सुरभित उपवन वन-वन
मादक-मोहक प्रसाद-
बाँटि रहल भवन-भवन
आँगन-आँगन सुवास, बहय सरस सुरुचि-धार!
मोन हमर शरद-प्रात, प्राण हमर हरसिंगार!!

जाहि कविक मन शरद ऋतुक प्रभातकालीन शालीनताक प्रतिरूप बनि जाय आ प्राण मे हरसिंगारत्व आबि जाय, ओकर महाप्राणत्व मे के संदेह क' सकैछ? आरसी बाबू वस्तुतः आ मूलतः मानसिक रूप सँ शरद ऋतुक प्रातःकालीन शालीनता तथा प्राणशः हरसिंगारत्वक पक्षधर कवि छलाह। व्याख्या कयल जाय तँ हजारो पृष्ठ मे शरद-प्रातत्व एवं हरसिंगारी प्राणत्वक व्याख्या कयल जा सकैछ, मुदा एहि ठाम से अभीष्ट नहि अछि। एहि ठाम तँ केवल एतबे कहब पर्याप्त होयत जे शरद स्वभावतः प्रसाद गुणक ऋतु होइछ आ सिंगरहार शृंगार भावक माधुर्य गुणकेँ प्राण मे बसयबाक योग्य पुष्प। मनक अर्थ होइछ चंचलता, मुदा चंचलता शरद ऋतुक स्वभाव नहि भ' सकैछ आ तहिना प्राणक मूल अर्थ होइछ बसात जे स्वयं चंचल होइछ, परंच जँ प्राण में हरसिंगारत्व आबि जाइक तँ ओकरो मे स्थिरता आबय लगैत छैक, समर्पणक

भाव जागि जाइत छैक। स्मरणीय अछि जे हरसिंगार भिनसर होइत-होइत चूबि क' धरती पर पसरि जाइछ आ ओकर मधुमय सुगंध सँ सम्पूर्ण परिवेश महमहा उठैछ। एहि कविताक वास्तविक अर्थ-बीजक ज्ञानक हेतु तँ कविक रचना-प्रक्रिया, रचना-काल आ आओर बहुत किछु जानि लेबाक प्रयोजन पड़तैक, तेँ तत्काल यैह मानिक' चलबा मे सुख छैक जे कवि आनन्दक विकेन्द्रीकरणक पक्ष लैत छथि आ प्रसाद तथा माधुर्यक प्रसारमे विश्वास करैत छथि। लगैछ जेना कवि ई कहय चाहैत होथि जे हरसिंगार सुगंधक लोकतंत्रीकरणक पुष्प थीक, सुगंधक आनन्दक बाँटि क' उपयोग करबा मे विश्वास रखैछ। व्यक्तीकरणक अपेक्षा सुगंधक समाजीकरणक ई भाव सेहो अहोभाव अछि आ एकर प्रकटीकरणक लेल मैथिलीक पांक्तेय कवि आरसी बाबू धन्यवादक पात्र थिकाह। कवि हमर एहि व्याख्याक समर्थन संभवतः स्वयं आगाँ बढ़िक' एहि 'पुहुप-प्रीतिभोज' केर आनन्द-लाभक लेल सार्वजनिक आमंत्रण किंवा हँकार दैत लगैत छथि-

जे अयबह, आबि जाह
बिनु मँगने लोढ़ै' जाह
आँचर भरि गम-गम
गमकैत गगन ओढ़ै जाह

'आइ पुहुप-प्रीति-भोज, सभकेँ सभ ठाँ हँकार! मोन हमर शरद-प्रात, प्राण हमर हरसिंगार!!' वस्तुतः 'सभकेँ सभ ठाँ हँकार' सिंगरहारे-सन पुष्प-सम्पदाक बल पर देल जा सकैत अछि। आरसी बाबू एही लोकतांत्रिक मूल्यवत्ताक समर्थन मे अपन 'सनातन पुरुष' शीर्षक कविता मे देश-काल-पात्र-निरपेक्ष लगैत छथि आ सार्वजनिक रूपसँ कहैत छथि जे-

कोन देश मे न हमर वास अछि,
कोन कालमे हम नहि रहलहुँ!
पानि कोन घाटक नहिँ पीलहुँ
कोन नदीक धार नहि बहलहुँ?
अछि अनादि इतिहास हमर,
भूगोल हमर लीलामय प्रांगण,
मंदिर, मस्जिद आ गिरिजाघर
हमर चेतना केर निकेतन।
गौर, श्याम, पीताभ कतहु हम,
कतहु घोर काजर-सन कारी।

अगणित भूषा-वेष हमर अछि,
एक रूप मे नर ओ नारी

आरसी बाबू विभिन्नता मे एकताक समर्थक राष्ट्रवादी कवि छथि आ भारतीय सनातनताक पक्षधर इतिहास-पुरुष छथि। जतय सनातनत्व बसैछ, ओतहि आरसी बाबू-सन कविक आवास अछि आ तेँ वो अपन *सूर्यमुखी* काव्य-संग्रहक 'सनातन पुरुष' शीर्षक कविता मे लिखैत छथि- .

युद्ध, कलह, विद्वेष, घृणा
संहार, शोक, संताप, पराजय,
दानवता-ई सभ दुर्गुण सँ
हमर विरोध करैए निर्दय।
हम मानवता छी, तथापि हम-
आगाँ सदय बढ़ैत रहै' छी-
सत्य, अहिंसा, करुणा, मैत्री-
प्रेमक पाठ पढ़ैत रहै' छी।

मानवताक एहि सनातनत्वक महत्त्व केवल मानवतावादी भारतवर्षक लोक बूझि सकैत अछि, युद्ध आ कलह सँ दूषित कोनो दानवतावादी क्षेत्र नहिँ। मानवता प्रेम बँटैत अछि, अहिंसा आ करुणा मे विश्वास करैत अछि। मानवता क्षमाशील होइछ आ दानवता निर्दय। एहि कविताक माध्यम सँ कवि विश्वमानवताक कल्पना सेहो कयलनि अछि।

भारतवर्षक राष्ट्रीय एकता अनेकता मे एकताक प्रतीक अछि। एकर विशाल भूखंड पर नाना प्रकारक भाषा, धर्म, क्षेत्रीयता, रंग-रूप आ संस्कृतिक समन्वय छैक। एतेक विविधताक मध्य भारतीयता एकटा एहन सूत्र अछि, जे सभकेँ सभ तरहेँ एकताबद्ध रखैत अछि। एहि विलक्षणता केँ शब्दबद्ध करैत कवि 'हम एक छी' शीर्षक कविता मे लिखैत छथि-

फूल जे हो रंग-रूपक,
एक गजरा मे गुंथल छी।
सात सुर-लय-ताल बान्हल
रागिनी रस मे पगल छी।
जँ अलग खर-पात छी,
तँ एक भ' जंजीर हम छी।

मत्त हाथीकेँ पछाड़' लेल
हलधर वीर हम छी।
भिन्न भाषा-भेद रहितहुँ-
एक भारत-भूमि जननी,
कवि करै अछि कल्पना-
हम एक छी, हम एक छी।
आइ भारत-भारती-
सम्पूर्ण भारतवर्ष भरि मे
भरि रहल अछि भावना-
हम एक छी, हम एक छी।

विदेशी सहायता पर निर्भरताक विरुद्ध आक्रोश व्यक्त करैत कवि आरसी बाबू आत्मनिर्भरता तथा आत्म-स्मृतिक पक्ष लैत छथि। *सूर्यमुखी* काव्य-संग्रहक 'निबोधन' शीर्षक कविता मे कवि सत्ताक निष्क्रियता केँ ललकारैत लिखने छथि-

के तोँ छलैं मोन तँ पारहिँ, हे प्रिय-प्राण स्वदेश !
पतने केँ उत्कर्ष बुझै छँ, सौभाग्ये केँ क्लेश !!
पार्थ-जकाँ तोँ मोहग्रस्त छँ, स्मृतिक भेल छौ नाश !
जीवन-समर-विमुख भ' भोगै छँ कुंठा-संत्रास !!
आइ तोरा ले चाही पौरुष, पाञ्चजन्य-उद्घोष !
तरल आगि जे भरय रुधिरमे लगन, शहीदी जोश !!
देशक माटि-पानि सँ उपजल सफल ज्ञान-विज्ञान !
जाग, जाग, ल' हमर देश तोँ पुरुष पुरातन-प्राण !!

कवि देशक प्राचीन वैभवक स्मरण करबैत गौरवशाली परम्पराक निर्वाह करबाक आह्वान करैत छथिन आ चाहैत छथिन जे अधिकारसँ अधिक कर्तव्य केँ महत्त्व देल जयबाक चाही। अपन 'ललकार' शीर्षक कविता मे सेहो कवि लिखैत छथि-

पयर तोँ बढ़ा,
पाठ तिमिरकेँ पढ़ा;
बाण धनुष पर चढ़ा !
तान ज्ञान-कर-कृपाण !
रे जुआन, महाप्राण !!

पीट ने कपार,
हृदय-दीपकँ सम्हार,
सुमति-आगिकँ पजार !
काल-व्याल-भाल फान !
रे जुआन, महाप्राण !!

एहि संग्रहक 'देश पुरातन' शीर्षक कविता मे कवि जतय एक दिस भारतक प्राचीन जीवन्तक चित्रण कयने छथि, ओतय आजुक दु:स्थितिक विषमताक पीड़ाक वर्णन सेहो कयने छथि। समृद्धिमूलक प्राचीन भारतक चर्चा करैत ओ लिखने छथि-

एक देश छल, जकरा ले' हम-
जान निछावर कयने छलियै'।
बाजी पर सर्वस्व लगाब' ले'
हम सप्पत खयने छलियै।
से सरिपहुँ नहिं जड़ छल, केवल-
माटि, पानि आ रंगक प्रतिमा।
ओ तँ छल चैतन्य मूर्त्ति-
साक्षात् हमर अस्तित्वक महिमा।

आशा कयल जाइत छल जे स्वतंत्रताक बाद भारत फेर विकसित हयत आ सभ प्रकारक अभाव-प्रभाव सँ मुक्त भ' जायत, मुदा जतय रक्षके भक्षक बनि गेल हो ओतय ककर चिन्ता के करत ? कवि नेतृत्वक बदलल किंवा स्खलित आचार-विचार पर क्षोभ व्यक्त करैत लिखलनि अछि जे-

प्रभुता पाबि मोह-मद उपजल
सेवाव्रती तपी योगी मे।
अन्तर किछु रहि गेल न पूर्वक-
त्यागी वर्त्तमान भोगी मे।
अक्षत, फूल, प्रसाद चढ़ै अछि-
एखनो मंदिर मे व्यापारी।
घंटा-शंख बजा क' कीर्त्तन-
करै पुजेगरी छथि सरकारी।
पावनि-पर्व, रामधुनि, उत्सव
भोग-राग आ शोभा-यात्रा।

नाच, गान, गोष्ठी, जुलूस-
रस-रंग, समारोहक मधु-मात्रा।
सभ टा अछि, तैयो ने किछु अछि,
मुड़ल जेना सत्यकं प्रति निष्ठा।
प्रतिमा तँ अछि वैह, मुदा नहि-
भक्ति-भावना, प्राण-प्रतिष्ठा।

'सत्य आ स्वप्न' शीर्षक कविता मे कवि आरसी कहैत छथि जे स्वतंत्रता संग्रामक दिन मे हमरा लोकनि देश मे रामराज्य स्थापित करबाक स्वप्न देखैत छलहुँ, मुदा आइ विपरीते स्थिति देखबा मे अबैत अछि। ओ संत कवि कबीर दासक 'तू कहता कागज की लेखी मैं आँखिन की देखी रे' केर शैली मे सत्यक पर्दाफाश करैत लगैत छथि-

के कहै अछि राम छथिए-
आ दशानन गेल मारल?
के कहै अछि राम विजयी-
आ निशाचर-राज हारल?
राम जँ जीवित, भला त'-
के कहत अछि मुइल रावण?
रावणक जँ नाम नहि तँ-
छथि कहाँ ओ तरण-तारण?
राम-राज्यक कल्पना मे-
ग्रंथ पर अछि ग्रंथ विरचल।
किन्तुकागज-लेखछोड़,
हम कहै' छी आँखि देखल।
गृद्धराजक दृष्टि सँ हम-
दूर देखै छी पुनीता।
वन्दिनी छथि शोक-वन मे-
भूमि पुत्री शांति-सीता।

कवि आरसी *सूर्यमुखी* काव्य-संग्रहक 'सजल कुशल' शीर्षक कविता मे मिथिलांचल मे बाढ़िक कारण व्याप्त दुर्दशाक चित्रण कयलनि अछि। घर-आँगन, खेत-खरिहान डूबि जयबाक कारण बाढ़ि-पीड़ित लोक कतेक कष्ट पबैत अछि, तकरो चित्रण एहि रचना मे अछि। एहन स्थितिमे लोकके सरकारी

राहतक प्रयोजन रहैत छैक, मुदा दुःखद प्रसंग अछि जे राहतो उपरे-उपरे हड़पि लेल जाइछ। कवि लिखलनि अछि-

दाहर मे डूबि गेल कुशलक सब धान!
याचक बनि ठाढ़ अछि एकटंग मचान!!
भासि गेल मूलधन, लाभक की बात?
चूल्हि कानि-कानि भरल, गील गीत-भात!
बान्हि क' करेज गेल बान्ह पर बथान!
दाहर मे डूबि गेल कुशलक सब धान!

* * *   * * *   * * *

साम्यवाद सिखबइ अछि बड़-पीपर गाछ!
कूद-फान मे लागल अनुदानक माँछ!!
चलल भगत बगुला करे वितरण-अभियान!
दाहर मे डूबि गेल कुशलक सब धान!!

आरसी बाबू छन्दोबद्धता मे विश्वास रखनिहार कवि छथि आ तेँ हुनक मुक्त छन्दोक रचना सभ मे अन्तर्लय पाओल जाइछ, गति-यति-लय रहैछ। दोहा छन्द मे सेहो ओ कतेको रचना कयलनि अछि, जाहि मे व्यंग्यक आक्रामक मुद्रा छनि। किछु दोहा द्रष्टव्य अछि-

पोथी पढ़ि किछु हैत नहि, तोड़' चाही रोट!
जोड़ूनोटबकोटिक',भोटबटोरूमोट!!

* * *   * * *   * * *

हर्रे लगय न फिटकिरी, रंग धरै तत्काल!
तँ सब काज अकाज क', करू तुरत हड़ताल!!

* * *   * * *   * * *

नहिँ विद्या, नहिँ द्रव्य किछु, नहि गुरुभक्ति विधेय!
एकमात्र भुजशक्ति सँ, डिगरी छात्रक ध्येय!!

* * *   * * *   * * *

नारा, भीड़, जुलूस सँ, थाकि गेल जनतंत्र!
सकल व्याधि-हर भेल अछि, आब अनशने मंत्र!!

सूर्यमुखी पुस्तक मे आरसी बाबूक किछु मुक्तक रचना सभ सेहो संकलित अछि। लगैछ जेना एहन अधिकतर कविता सबैया-सन छन्द मे

लिखल गेल हो। एहि रचना सभ मे रोचकता छैक आ ब्रजभाषाक छन्दक माधुर्यो भेटैत छैक। द्रष्टव्य अछि एकटा रचना-

गोपवधूक विलोचन चंचल
गोरस-गागर बाट तकैए।
देखइ ले' मुख पूनमचन्द्र-
वियोगक सागर बाट तकैए।
गोकुल-कूल-दुकूल लता-
अनुराग-उजागर बाट तकैए।
धेनुक हाट घटा घन-घाट-
छटा नटनागर बाट तकैए।

सूर्यमुखी मे सेहो आरसी बाबूक किछु मैथिली आन्दोलनक कविता संकलित छनि। एक टा कविताक शीर्षक छैक 'क्रांति-पूत'। एहि कविता मे कवि कहैत छथि-

मैथिलीक क्रांति-पूत जागि रहल छै!
करू वा मरूक लगन लागि रहल छै!!
आँखि फूजि गेल
नीन टूटि गेल छै
राति के विभोर
चोर लूटि गेल छै
के करैत सोर, ठोर दागि रहल छै!
मैथिलीक क्रांति-पूत जागि रहल छै!!

*** ***

जन-समुद्र मे हिलोर
दग्ध प्राण छै!
पयर छै बढ़ल, महान्-
लक्ष्य-ध्यान छै!
भोर भेल छै, अन्हार भागि रहल छै!
मैथिलीक क्रांति-पूत जागि रहल छै!!

एकटा कविताक शीर्षक छैक 'मैथिली-मंदिर मे!' सर्वविदित अछि जे 'मैथिली-मंदिर' मैथिली पुनर्जागरण अभियानक पुरोधा पुरुष स्वर्गीय आचार्य सुरेन्द्र झा सुमनक दरभंगा स्थित आवासक नाम छनि। तेँ भ' सकैछ 13

अप्रैल, 1968 केँ लिखल गेल ई कविता हुनके सुनयबाक लेल लिखल गेल होअय। एहि कविताक अंतिम चरण मे आरसी बाबू किछु एहने-सन शुभकामनो व्यक्त करैत लगैत छथि-

मैथिली वर देथि जे छथि मैथिली-मंदिर-पुजारी,
माटि नहि मिथिलाक छोड़थि, बनि रहथि कल्याणकारी।
प्रार्थना अछि, शत शरद-पर्यन्त ओ सानन्द जीबथि,
लाभ क' सुख-शांति सहजेँ जीवनक नित अमृत पीबथि।

मैथिली काव्य-साहित्य कवि आरसी प्रसाद सिंहक अवदान केँ बिसरि नहि सकैत अछि। ई मूलतः गीतकार छथि आ सरल-सहज गीत सभक कारण हरिदम मोन राखल जयताह। प्रकृति-प्रेमपरक गीत सभ मे हिनक कविताक आत्मा बसैत छनि। कवि प्रकृतिक सुन्दरता पर मुग्ध रहलाह अछि आ कतेको प्रकारक फूल केँ अपन कविताक विषय बनाओलनि अछि। मैथिली आन्दोलनक पक्षक कविता मैथिली मे हिनक लोकप्रियता केँ शिखर पर चढ़ओलक आ प्रथम पांक्तेय कविक रूपमे हिनका प्रतिष्ठित कयलक। हिनक भाषा सरल, भाव सहज आ शिल्प सद्यःसम्प्रेषणीय अछि। हिनक मैथिली कविता मे मिथिलाक परिवेश साकार होइत रहल आ मैथिल मन-प्राणक उच्छवास भेंटैत रहल अछि।

कवि लघुता मे विराट्क स्थापनाक आकांक्षी छथि, मुदा एहन संभावना आजुक युग मे संभवे नहि अछि। ने तँ कतहु सर्वसम्मति नजरि अबैछ आ ने एक रूपते। सिद्धान्त, पथ, पंथ, विचारधारा-सभ मे ओझरौट नजरि अबैछ। आरसी बाबू *सूर्यमुखी* नामक पोथीक 'जग-जीवन' शीर्षक कविता मे आश्चर्य व्यक्त करैत लिखैत छथि-

सभक पृथक् व्यवहार, प्रकृति, मति
अस्तित्वक की एतय प्रयोजन?
शाखा - पत्र - पुष्प - फल - सम्मुख-
तरुवर-मूलक ज्ञान अकिंचन।
ई विचित्र संसार, विरोधाभासक
दृश्य आँखि मे सदिखन।
भरमि-भरमि मानव अबोध
मृग-जकाँ मरइए मरु-तृष्णा-वन।

एहि कविताक अन्त मे कवि समन्वयवादी दृष्टिकोणक परिचय दैत छथि आ सुख-दुःखक सहोदरत्व किंवा सोदरत्वकेँ स्वीकार करैत लिखने छथि जे-

सुख-दुख दुनू सहोदर भ्राता,
शूल-फूल दुहु साथी-संगी।
छाहरि रौद-जकाँ अभिन्न अछि-
जीवन-इन्द्रधनुष सतरंगी।
एक रंग सँ एकांगी भ'
जायत नहि की मोनक अम्बर?
की तँ कृष्ण बनू नटनागर,
की वितृष्ण नटराज दिगम्बर।
* * * * * *
सर्वालिंगन जे करइत-ऐ
जीवनकेँ सम्पूर्ण परिधि मे,
वैह कदाचित् आबि सकैए-
कोनो दिन केन्द्रक सन्निधि मे।

कवि संभवतः तेँ 'विरोधाभास' शीर्षक कविता मे नाना प्रकारक सांसारिक विसंगतिक सत्यकेँ स्वीकार करैत छथि। ओ एहि सत्य केँ सेहो स्वीकार करैत छथि जे आजुक युग मे सज्जन दरिद्र आ दुर्जन धनाढ्य बनि जाइत अछि। कविक शब्दावली अछि-

एहि जगत् मे कुसुम-कुंज जँ
तँ कंटक-संकट किछु कम ने।
अनायास सौभाग्य सुलभ जँ
तँ समुचित उपभोग सुगम ने।
पुण्यवान् केँ दुखिया देखल
पापी जनकेँ पाओल सुखिया
गुणी व्यक्ति रहि जाथि उपेक्षित-
तिकड़मबाज बनल अछि मुखिया
धूर्त्त-शिरोमणि सत्ताधारी,
त्यागक पाठ पढ़ै छथि ज्ञानी।
मूर्खक घर मे लक्ष्मी बइसलि,
पंडित-प्रवर दरिद्र अमानी।

ई स्थिति आक्रोश आ संघर्षक स्थिति अछि, मुदा केवल आक्रोश तथा संघर्ष सँ एहि विसंगतिकेँ दूर नहि कयल जा सकैछ। समस्याक समाधान तँ धैर्य एवं शांतिए सँ संभव छैक। भारतीय आध्यात्मिक वातावरण संभवतः तेँ वैभवक अपेक्षा मनसँ सुखी होयबाक कल्पनाक अनुमति दैत अछि। कवि आरसी सेहो एहि कविताक अन्तमे यैह निष्कर्ष दैत छथि जे-

जे सत्यक प्रकाश मे रहि क'
जीवन, स्वास्थ्य करइ अनुभव छथि।
परम अकिंचनतो मे अतुलित-
संसारक पावइ वैभव छथि।

कवि आरसी उत्तर छायावादी युगक कवि छथि आ अरविन्द दर्शन सँ सेहो प्रभावित छथि तेँ सत्य आ शांतिक अन्वेषण मे हिनक अनेक कविता रहस्यवादी परिवेशक लगैत अछि। *सूर्यमुखी* नामक पोथीक 'युगबोधक विपत्ति' शीर्षक कविता सेहो एहने-सन अछि। कवि लिखैत छथि-

बेलक मारल हम बबूर-तर जाए पड़ै' छी।
मीठक धोखे जहर हलाहल खाए मरै' छी।
अंधकार सँ अंधकार मे भटकि रहल छी।
अंधकूप सँ अंधकूप मे लटकि रहल छी।
आन्हर-सन छी ल' जाइत हम आन्हर द्वारा।
खाली फयर करै' छी हम आदर्शक नारा।
मृगतृष्णावश दौड़ि रहल छी मरु-कानन मे।
चानन ताकि रहल छी हम बाघक आनन मे।

कवि 'आनन्दक खुजल दुआरि' मे स्वप्नवत् सुख तथा अमरत्व प्राप्त दुःखक चर्चा करैत आनन्द केँ दुर्लभ मानैत छथि। कविक अनुसार एहि असार संसार मे ने क्यो दुःखक मांग करैत अछि आ ने सुखक त्याग करय चाहैत अछि। दूनू अपने आप अबैत अछि आ अपन उपस्थितिक प्रभावो देखबैत अछि। कवि लिखैत छथि-

सुख भोगल अछि, दुख देखल अछि,
दुर्लभ अछि आनन्द।
स्वप्न भेल सुख, अमर भेल दुख,
डूबल जीवन-छन्द।

दुख ने माँगल, सुख ने त्यागल,
आयल अपने आप।
शीतलता ले' श्रमकँ साधल,
सहज भेल संताप।

कवि आरसी रहस्यवादी संत कवि-जकाँ सुख-दुःखक कारणक अनुसंधान मे तँ लगैत छथि, मुदा अन्ततः कोनो निष्कर्ष पर नहि पहुँचि पबैत छथि। कविक अनुसार निश्चित रूपेँ कोनो प्रच्छन्न अस्तित्व अछि जे संसारक नियंत्रण क' रहल अछि। ओ कहैत छथि-

कठपुतरी-सन नाचि रहल छै'
परवश प्राण प्रवीण।
ओस चाटि क' तृषा बुझाओल,
बनल एहन मति क्षीण।
हाथक छाड़ि परसमणि, पूजल-
हम पाथर परिमाण।
अन्तर्यामी देव विसरि हम-
कयल दिवंगत-गान।
राजमार्ग कँ त्यागि धरइ अछि-
पयर कुपथ पर अन्य।
से युग-पुरुष-केसरी अथवा-
विद्रोही क्यो धन्य।
कहि नहि सत्यक ज्योति कतय अछि?
के प्रभुता-संपन्न?
सुख-दुखसँ जे पार तत्त्व अछि-
से की चिर प्रच्छन्न?

परम सत्ता, परम तत्त्व अर्थात् परमपुरुषक अस्तित्व प्रच्छन्ने रहि जाइत छैक। एहि तत्त्वक साक्षात्कार बहुत कठिन छैक आ तेँ एकर अस्तित्वक अनुभव करबाक मार्ग केँ सहज मार्ग मानल गेल अछि। सभ सँ नीक छैक जे अपन जीवनक आन्तरिक सत्ता केँ स्वीकार कयल जाय आ 'कोऽहं-सोऽहम्' केर चक्कर मे पड़ने विना शंकराचार्यक महावाक्य-पथ पर चलि 'अहं ब्रह्मास्मि' तथा शिवोऽहम्' केर सत्यकेँ आदर्श मानल जाय। कवि आरसी सेहो *सूर्यमुखी*

पोथीक 'जीवन-संध्या' शीर्षक कविता मे अपन जीवन-देवता केँ प्रणाम करैत रहैत छथि-

हमर जीवन-देवता हे चिर सखा, अयिप्राण !
आइ हम अनुभव करै छी अपन मति-अज्ञान !!
साध्यवेला मे जखन अस्ताचलित दिनमान !
गा रहल छै' विहग तोहर विजय-कलकल गान !!
धन्यवादक फूल-डाली, कतेक सुरभित छन्द !
आइ स्मृतिमे तोहर अर्पित मलय-मधु-मकरन्द !!
आइ हम कृतकृत्य, जीवन-देवता, तोँ धन्य !
देल जीवन-फल सरस, तोहर कृपा-पर्जन्य !!

'वचनिका' शीर्षक कविता मे सेहो आरसी बाबू एही आस्थाक स्थापना मे विश्वास करैत लगैत छथि। जहिना विद्यापति कहने छलाह जे 'समय पाबि तरुवर फल रे, कतबो सिंचु नीर' तहिना कवि आरसी प्रसाद सिंह सेहो प्रकारान्तर कहैत छथि-

फल देब' पर जैखन तरुवर आबि जाइ छै,
फूल अपन जन्मक सार्थकता पाबि जाइ छै।
अर्थ जखन खोलै छै घोघट अपन रूपमय,
शब्द-झरी कविताक विदा भ' गाबि जाइ छै।

*** *** ***

शब्द-कोषमे अर्थ न, अर्थ न बैंक-बचत मे,
अर्थ भेटत व्यवहार-काल मे, वस्तु-जगत् मे।
पोथी मे पर्याय लिखल छै जलक अनेको,
किन्तु तृप्ति तँ तृषित कंठ लै छै शर्बत मे।

आब आरसी बाबू विदा भ' चुकल छथि, तेँ हुनक उपस्थितिक अनुभव मैथिलीक पाठक लोकनि हुनक मैथिली कविता टा मे क' सकैत अछि। कहलो गेल अछि जे 'कीर्तिर्यस्य स जीवति।' एक-एक टा कविता मे जीवित रहताह किंवा अमरत्व पबैत रहताह आरसी बाबू। ओ *सूर्यमुखी* काव्य-संग्रहक 'ऋतुराज दर्शन' शीर्षक कविता मे संकेतो क' गेल छथि-

वसन्त ऋतुक आगमन भेल छैक-
अमलतास डारि-डारि,.
पात-पात पर।

जेना क्यो लाल-हरिहर-पीअर रंगक
महमह महकौआ बाल्टी
उझिलि देने होअय;
मन्द-मन्द दक्षिणी बयारसँ
गोटक फूलल-फूलल खेतमे
जेना कोनो भरल पोखरि
लहरा रहल होअय पीताम्बरक।
आमक मंजर सँ रस चुबैत-
बौखल-बताह जकाँ
भनभनाइत मधुमाछी
हाँजक हाँज;
बाग-बगैचा मे फूल-फूल बिहुँसल,
ठोर भकरार, तोर पर तोर
ठहाका दैत,
सुगन्धिक लहरि पर लहरि
रसराजक साक्षात् शोभा-दर्शनसँ
हमर प्राण अम्बपाली-जकाँ
नाचि-नाचि क'
गीत गुनगुनाबय लागल।

वस्तुत: किंवा तथ्यत: मैथिली मे कवि आरसीक पदार्पण ऋतराजे जकाँ भेल छल। लागल छल जे 'अमलतासक डारि-डारि-पात-पात पर जेना क्यो लाल-हरियर-पीअर रंगक महमह करैत बाल्टी उझलि देने होअय।' हँ, मैथिली मे ओ लिखय लगलाह आ मैथिली-भाषाक 'प्राण अम्बपाली-जकाँ नाचि-नाचि क' गीत गुनगुनाबय लागल' छल। ओ अपन कविता मे एहिना अनन्त कालधरि गुनगुनाइत रहताह, से आशा अछि।

❑

3

हिन्दी साहित्य कें आरसी बाबूक देन

कवि आरसी प्रसाद सिंह मैथिली-जकाँ हिन्दी साहित्य कें सेहो अपन गद्य-पद्य रचना सँ आजीवन समृद्ध करैत रहलाह। *कलापी* एहि उत्तरछायावादी कविक पहिल काव्य-संकलन थिकनि, जकर प्रकाशन 1938 ई० मे हिन्दुस्तानी प्रेस, पटना सँ भेल छल। ई पुस्तक अपन साज-सज्जा और रेशमी जिल्दक कारण मनोरम छल आ एहि मे संगृहीत गीत सभ सेहो आरसी बाबू कें एक समर्थ कविक रूप मे स्थापित क' देवा मे समर्थ सिद्ध भेल। कलापी शीर्षक कविताक प्रथम पंक्तिये एतेक कोमल सुर मे साधल लगैछ जे पाठकक मन मोहि लैछ-

आज सावन-घन घिरे हैं-
नृत्य कर मेरे कलापी!

एहि संग्रहक 'संध्या' शीर्षक कविता सेहो अपन विलक्षण यति-गतिक कारण पाठकक कंठ मे बसि जाइछ-'पश्चिम पयोधि-तटपर, शीला सुलक्षणा-स्त्री, वह कौन झाँकती है ? एहि काव्य-संकलनक 'नील गगन का उत्पल' शीर्षक कविता मे कवि अपन जीवनक वर्णन करैत प्राकृतिक सौन्दर्यक बखान करैत लिखनहि छथि-

मेरा जीवन-
इन्द्रधनुष का कानन,
सातो रंग घुले प्राणों में-
उन्मद, उन्मन।
सुमनों का आकर्षण,
कुंज-कुंजमें शिलीमुखों का-
पुंज-पुंज गुंजन।
जग-जीवन का मानस-सर;
निकल रहा जल से समतल-
डर का इन्दीवर सुन्दर।

फैल रहा सौरभ,
दिशि अवाक् अपलक, अनन्त-
विस्मय से नीरव भू-नभ।

आरसी कविक दोसर काव्य-संकलनक नाम थिक, जकर प्रकाशन 1944 ई० में विशालकाय रूप मे भेल छल। हुनक 'जीवन का झरना' शीर्षक सुप्रसिद्ध एवं लोकप्रिय कविता एही संग्रहमे संकलित अछि। एहि कविता मे कवि आरसीक मस्ती-भरल जीवन-दर्शन झरनाक रूपक किंबा विम्बक माध्यम सँ प्रकट भेल अछि। कवि कहैत छथि-

यह जीवन क्या है? निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी है
सुख-दुख के दोनों तीरों से चल रहा राह मनमानी है।
कब फूटा गिरि के अन्तर से, किस अंचल से उतरा नीचे,
किन घाटों से बहकर आया, समतल में अपने को खींचे।

कवि अपन एहि कालजयी रचना मे प्रतीक आ विम्बक माध्यम सँ जीवनक प्रवाहमयता अथच गत्यात्मकताक चित्रण सरल भाषा मे करैत लिखैत छथि-

निर्झर मे गति है, यौवन है, यह आगे बढ़ता जाता है।
धुन एक सिर्फ है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है।।
बाधा से, रोड़ों से लड़ता, वन के पेड़ों से टकराता।
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता चलता यौवन में मदमाता।।
लहरें उठती हैं, गिरती हैं, नाविक तट पर पछताता है।
तब यौवन बढ़ता है आगे, निर्झर बढ़ता ही जाता है।।

ई कविता जीवन मे सदिखन आगाँ बढ़बाक चेतना जगबैछ आ कर्मठताक प्रेरणा दैछ। कवि कहैत छथि जे गतिशीलते मे जीवन-शक्ति होइछ, तेँ झरना-जकाँ मनुष्यो केँ प्रत्येक पल गतिशील रहबाक चाही-

निर्झर कहता है बढ़े चलो, तुम पीछे मत देखो मुड़कर।
यौवन कहता है- बढ़े चलो, सोचो मत होगा क्या चल कर।।
चलना है, केवल चलना है, जीवन चलता ही रहता है।
मर जाना है रुक जाना ही, निर्झर यह झर कर कहता है।।

आरसी काव्य संकलन मे आरसी बाबूक कवि-मनक अभिव्यक्ति विशाल फलक पर भेल अछि। एहि मे प्रत्येक वयसक पाठकक रुचिक अनुरूप कविता

उपलब्ध अछि। भाषा, छन्द, शिल्प आ शैलीक दृष्टियेँ सेहो एहि संग्रहक कविता सभ प्रभावशाली अछि। एहि संग्रह मे प्रकृति, ज़ीवन, यौवन,मस्ती, प्रेम आदिक भावावेशक उच्छल अभिव्यक्ति भेल अछि। एहि संग्रहक बाद 1944 मे आरसी बाबूक तेसर काव्य-संकलन प्रकाशित भेलनि *नयीदिशा*। ई युग प्रगति आ प्रयोगवादक युग छलैक आ तेँ एहि संग्रहक कविता सभ मे छन्द, शिल्प आ विषय-वस्तुक दिशान्तर देखल जाइछ। एकर बाद प्रकाशित भेल *पांचजन्य* नामक काव्य-संग्रह, जाहि मे आरसी बाबू मानवतावादी कविक रूप मे लगैत छथि। ओहू समय मे देश परतंत्र छल आ स्वतंत्रता-संग्राम पूर्ण उन्मादक संग चलि रहल छल, तेँ भ' सकैछ जे मनुष्य केँ जगयबाक ब्याजेँ कवि स्वतंत्रताक लेल देशे केँ जगयबाक बात कयने होथि। ओ कहैत छथि जे स्वतंत्रता मनुष्यक जन्मसिद्ध अधिकार होइछ-

तुम स्वतंत्र हो मनुष्य, पृथ्वी में जहाँ कहीं
एक हो, समान हो, एक आत्म-प्राण हो
स्वयंसिद्ध एक ही मनुष्य के प्रमाण हो
देश, जाति, वर्ण की विभिन्नता, विभेद नहीं।

संजीविनी आ *नन्ददास* नामक खण्डकाव्य में सेहो कवि मनुष्य-मनुष्यक मध्यक दूरीकेँ पाटैत मानवीय प्रेम-भावनाक पक्षधर लगैत छथि। *संजीविनी* मे कच आ देवयानीक प्रेम-कथा अछि तथा *नन्ददास* मे सेहो कवि नन्ददासक सात्त्विक प्रेम-भावना अभिव्यक्त भेल अछि। कविक दृष्टि मे प्रेम जाति, वर्ण, देश आदिक बाधाकेँ नकारि क' उमड़ैत अछि आ उन्मुक्त भाव सँ भ' उठैछ। कवि *नन्ददास* नामक अपन खण्डकाव्य मे लिखैत छथि-

क्षुद्र कीट से लेकर ब्रह्मा तक जो जंगम
रजकण से लेकर सुमेरु तक जो जड़-संगम
सब मे जब सम-भाव एक समता आती है
आत्मा ही आत्मा जब सब में दिखलाती है
तब वह प्रेम उमड़ता है, जो है जग-जीवन
यही ज्ञान है और यही है ईश्वर-दर्शन

आरसी बाबू अपन रचल काव्य-जगत् मे घृणा आ द्वेषक बदला मे प्रेमक उपासक छथि तथा तेँ जतय कतहु ओ प्रेमक चर्चा करैत छथि लौकिको प्रेम-भाव केँ अलौकिकताक आवरण प्रदान करैत लगैत छथि। हुनक कहब छनि-

दिव्य भाग है प्रेम, हिमाचल-सा निश्चल है
तुलसी-दल-सा यह पवित्र है, गंगाजल है
***　　　***　　　***
प्रेम और भगवान एक हैं, तनिक न अन्तर
और प्रेम के द्वारा ही मिलता परमेश्वर

कवि आरसी प्रसाद सिंह प्रेम आ वासना मे अन्तर बुझैत छथि। हुनक दृष्टि मे वासना दैहिक तृप्ति द' सकैछ, मुदा प्रेम-भावना मे आत्मा केँ तृप्त करबाक क्षमता होइत छैक। ओ प्रेमकेँ शाश्वत तथा कामुकता किंवा वासनाकेँ क्षणिक मानैत छथि। एहि सत्यक विश्लेषण करैत अपन *नन्ददास* नामक खण्डकाव्य मे ओ लिखबो कयलनि अछि-

विषय-वासना और प्रेम में अन्तर इतना
अमृत-सरोवर और चपल मरुजल में जितना
एक विनश्वर और दूसरा है अविनाशी
एक दुःख का मूल, अपर आनन्द-विलासी
***　　　***　　　***
भ्रमवश नर ने नाम प्रेम का काम दिया है।
देकर मणि-माणिक्य मोल ज्यों काँच लिया है।।
प्रेय समझकर वह फँसता है मोह-कलिल में।
और डूब मरता है पापी पाप-सलिल में।।

हिन्दी मे आरसी बाबू एतेक अधिक लिखलनि अछि जे हिनका लिक्खाड़ कवि कहल जा सकैत छनि। एक समय छल जहिया हिन्दीक पत्र-पत्रिका सभ हिनक रचना सँ भरल रहैत छल आ लगैत छल जेना ई कलमक बदला मे मशीन सँ लिखैत होथि। हिनक पुस्तक सभक संख्या सेहो सत्तरि सँ कम नहि छनि। मूलतः गीतकार होइतो ई कतेको प्रबंधकाव्य, बाल-कविता, कथा, एकांकी, संगीत रूपक आ समीक्षा सेहो लिखलनि। विषयक विविधताक बादो ई राष्ट्रीय भावनाक कविक रूप मे प्रसिद्ध रहलाह अछि। ओ भारत केँ चिर स्वतंत्र आ सम्पन्न राष्ट्रक रूप मे उदित देख' चाहैत छलाह आ तेँ *पूर्णोदय* नामक अपन प्रथम महाकाव्य मे लिखने छलाह-

दिव्य चेतना की ज्वाला में जीवन को कर ज्योतिर्मय,
रूपान्तर-संदेश-अमृत ले भारत का हो रहा उदय।

आरसी बाबू अपन *नन्ददास* नामक खण्डकाव्य मे सेहो राष्ट्रीय जीवनकेँ जाग्रत करबाक मुद्रा मे लिखैत छथि-

उठो, उठो! अवलोको जीवन में प्रभात को।
नव वसन्त में रंगे हुए मधुमलय वात को।
गाओ कवि वह अमर गीत जो बिजली भर दे।
जो हताश, गतिहीन मृतक को जीवित कर दे।

आरसी जीक कवि स्वतंत्र भारत केँ भयमुक्त भारतक रूप मे देखबाक आकांक्षी छनि। ओ नहि चाहैत छथि जे गरीबो सँ गरीब लोकक मन मे पहिलुका दीर्घकालीन गुलामीक प्रभाव रहैक। ओ ऐश-मौजोक पक्षपाती नहि छथि। ओ लिखैत छथि-

नव युग को मधु की चाह नहीं, रे उसे चाहिये अग्नि-शिखा!
मानस से भय की भीति भगा, तू बलि देने की राह दिखा!!
वह भूत-मृत्यु का काल-दूत, मत भूतकाल की दिला याद!
इन कायरता के पुतलों को तू स्वतंत्रता का मंत्र सिखा!!

आरसी बाबूक *संजीविनी* खण्डकाव्यक नायक वृहस्पति-पुत्र कच राष्ट्रीय भावनाक संवाहकक रूप मे प्रकट भेल अछि। शुक्राचार्य सँ संजीविनी विद्या सिखबाक प्रेरणा सेहो ओकरा राष्ट्र-रक्षेक लेल भेटलैक अछि। विशालकाय आरसी-साहित्य मे यत्र-तत्र कवि राष्ट्रीय भावना, यौवन, व्यवस्थाक विरुद्ध विद्रोहक स्वर आ नवनिर्माणक हेतु आतुर लगैत छथि। एकटा उद्धरण द्रष्टव्य अछि- 'यौवन वह जो जले निरन्तर, हिमगिरि पर भी सर्द नहीं हो'। एतवे नहि, कवि आरसी प्रसाद सिंह देशक युवा पीढ़ीक आह्वान करैत छथि जे-

धुँधली रेखाएँ मिटा जीर्ण, लाना प्रवीर वह युग नवीन!
तू मतवाली-सी तान छेड़, हाथों में लेकर प्रलय-वीण!
दल चरणों से करुणा-मृणाल बढ़ चल ओ उच्छृंखल कराल!

आरसी जखन विद्रोहक शंख-नाद करैत छथि, तँ परिणामक चिन्ता मे समय नहि गमबैत छथि। हुनक क्रांति-चेतना हुनक शब्द-शब्द सँ झहरय लगैछ। यथा-

झुके न झंझा के झोंकों में,
भर दो वह अदम्य साहस-बल

कुचल चले अंगारों को,
हँस कंठ लगाये कुटिल हलाहल
×× ×× ××
आग लगे पानी में,
दिल हो जाये मद पीकर दीवाना !
विद्रोहिणि, मेरे जीवन में -
फूँक राग वह अलमस्ताना !!
सिखला दे तू आज मुझे -
पत्थर पिघलाने की भाषा !
मरने की तदवीर बता कुछ -
ला विष की उन्मत्त पिपासा !!

आरसी बाबू एतेक लिखलनि अछि जे सम्भवत: कोनो महत्त्वपूर्ण विषय हुनक कलमक स्पर्शसँ वंचित नहि रहि सकल अछि। ओ स्वतंत्रता आ स्वच्छन्दता दूनूक पक्षधर लगैत छथि आ तेँ आजीवन कोनो प्रकारक बंधन केँ स्वीकार करबा मे हुनका असौकर्यक अनुभव होइत रहलनि। ओ जागरणक प्रेरणा दैत रहलाह आ प्रत्येक प्रकारक विद्रूपक विरुद्ध कलम तानि क' लिखैत रहलाह। राष्ट्रवादिता किंवा भारतक सांस्कृतिक राष्ट्रवादक संरक्षकक रूप मे जागल हिनक कवित्वक किछु पाँती द्रष्टव्य अछि -

प्रतिहिंसा की आग दृगों में,
सुस्मिति-रेखा अधरों पर,
गौरव की टीका ललाट पर-
मातृ-मूर्त्ति मन में सुन्दर !
उर में देश-प्रेम की पावन-
एक धधकती चिनगारी,
कुलिश-करों में राष्ट्र-पताका,
यौवन की प्रतिमा प्यारी !
घूम रहा है द्वार-द्वार पर-
अलख जगाता वह बागी,
जागो, सदियाँ बीतीं सोये,
वह देखो दुनिया जागी !

वसन्त ऋतु मौज-मस्ती, राजसी राग-भोग आ सौन्दर्य-भावनाक उत्प्रेरक ऋतु मानल जाइछ, मुदा कवि आरसी जखन क्रान्तिक मुद्रा में अबैत छथि तँ

कहि उठैत छथि- 'फैला दो डगमग अग-जग में फिर महाक्रांति की ध्वंस-आग।' वस्तुतः जखन देश परतंत्रताक दंश अङेजने छल, तखन आरसी बाबू-सन राष्ट्रवादी कवि वसन्तो ऋतु मे विदेशी सत्ताक ध्वंसक कामना क' सकैत छल। ओ वसन्त केँ सम्बोधित करैत लिखने छथि-

हम करते हाहाकार-ज्वार,
मुखरित श्मशान में नरक-वास,
चल रहा तुम्हारा और वही रे-
राग-रंग, उल्लास-लास !
पागल, क्यों लाते हो दुर्दिन में-
सपनों के मीठे संदेश ?
टुक देश कुशासन-कोष-दग्ध-
द्रुपदा का क्षण भर नग्न-वेश !

कवि विद्रूपक विरुद्ध आक्रोश व्यक्त करैत चान आ सूर्योक दर्प केँ ध्वस्त करबाक संकल्प व्यक्त करैछ तथा ओज एवं तेज केँ साकार करबाक साहस देखवैत लिखैछ-

लाऊँगा फणीश को पाताल से, फणों को तोड़
नाचूँगा कन्हैया-सा, निराला गीत गाऊँगा।
चाँद को झकोर दूँ, मरोड़ डालूँ सूरज को,
मार-मार ठोकरों से कंदुक बनाऊँगा।

आरसी प्रसाद सिंहक कवि-मन एहन कोनो सत्ता केँ पसिन्न नहि करैछ जे दलित-पीड़ित लोकक शोषण करय। ओ बरोबरि केर अधिकारक समर्थक अछि। कवि चाहैत छथि जे गरीबी आ अमीरी परम्पराक आधार पर नहि चलय। ओ लिखैत छथि-

मैं उस शासन का वैरी हूँ,
उस सत्ता का विद्रोही,
इतराती खून हमारा ही-
पीकर जो सत्ता दीवानी।
×× ×× ××
मैं कहता हूँ दे दे तत्क्षण
मेरा सारा अधिकार मुझे।

मेरा मकान, मेरी दौलत,
मेरा शासन-संसार मुझे।

कवि आरसी स्वतंत्र भारतोक दुर्दशा सँ दुःखी लगैत छथि। ओ चाहैत छथि जे देशक प्रगति द्रुत गति सँ होअय आ आर्थिक-सामाजिक समानताक वातावरण बनय। कवि सदाचार, नैतिकता आ मूल्यवत्ता केँ साकार होइत देखय चाहैत छथि, मुदा नेता तथा जनताक वास्तविक स्थिति विपरीते अछि। ने कतहु स्वच्छता नजरि अबैछ आ ने पारदर्शिता उभरि पबैत अछि। ओ अफसोस करैत लिखैत छथि-

लाँघ रेखा चेतना-सीता खड़ी है !
दृष्टि राघव की कनक-मृग पर पड़ी है !!
××　　××　　××
बोध के पुतले जलाये जा रहे पथ पर !
लाश ढोई जा रही ईमान की, रथ पर !!
आरती से आग के शोले निकलते हैं !!
तैरते आक्रोश के घन बम उगलते हैं !!
बह नहीं जाओ, समय की तेज धारा है !
साथियो, आगे बढ़ो, ओझल किनारा है !!
××　　××　　××
पेट में दाना नहीं, मुँह पर जुगाली है !
देवता नेपथ्य में हैं, मंच खाली है !!
सांत्वना के सेठ का निकला दिवाला है !
कोष सूना, हाट में सोना उछाला है !!

कवि महगी-गरीबीक मारि सँ तबाह जनताक दुर्दशा सँ दुःखी छथि आ चाहैत छथि जे स्थिति मे परिवर्त्तन आबय। ओ सुविचारित छथि आ चाहैत छथि जे स्थिति मे परिवर्त्तन आबय। ओ सुविचारित एवं लक्ष्य-वेधी विकास-योजना चाहैत छथि। ओ नैतिक मूल्यवत्ताक स्थापना चाहैत छथि आ मानवतावादक रक्षा लेल स्पष्ट शब्द मे कहैत छथि-

बंद आँखों पाँव बढ़ते जा रहे हैं !
जिन्दगी के भाव चढ़ते जा रहे हैं !!
मूल्य भौतिक वस्तु का नभ छू रहा है !
किन्तु, नैतिकता-सुधा-घट चू रहा है।।

जब न मानवता बचेगी, क्या रहेगा !!
कौन किससे वेदना अपनी कहेगा !!

×× ×× ××

देश मेरे सच कहो, मैं मुस्कुराऊँ ?
या तुम्हारे हाल पर आँसू बहाऊँ ?
कुछ नहीं अब सूझता है, क्या करूँ मैं !
कौन-सी परिकल्पना आगे धरूँ मैं !!

कवि आरसी देश-प्रेम केँ व्यापारक वस्तु नहिं मानैत छथि आ तेँ अनेक प्रकारक आक्रोशक बादो देशक प्रति समर्पण-भाव व्यक्त करैत रहलाह अछि। ओ 'पुत्रोऽहं पृथिव्याः' केर सनातन शैली में विश्वास करैत लिखलनि अछि जे बेर-बेर जन्म लेब' पड़य तैयो भारते मे जन्म ली-

तेरी माटी में जनम लिया,
तेरे आँगन में खेल किया,
तेरी धरती की धूलि बनी-
मेरे माथे का प्रिय चन्दन।

×× ×× ××

तेरी महिमा का शेष नहीं,
तुझ-सा है कोई देश नहीं।
फिर इसी देश की माटी में-
हो मेरा जीवन और निधन।

कवि आरसी अपन कुँअरसिंह महाकाव्यो मे आशा-निराशा सँ ऊपर उठि क' धीरोदात्त भाव सँ अपन राष्ट्र-प्रेम केँ व्यक्त कयलनि अछि। ओ कुँअर सिंहे-सन स्वतंत्रता-सेनानी जकाँ आत्म-विश्वास व्यक्त करैत लिखने छथि,

तरुण रहेगा जबतक अग्नि-कुमार एक भी,
जबतक जग में आजादी का मीत रहेगा,
देश-भक्ति की आग रहेगी जलती जबतक-
अमिट तुम्हारा तबतक प्यारा गीत रहेगा।

×× ×× ××

अमर प्रेरणा लिये तुम्हारे बल-पौरुष की,
चलते सदा रहेंगे सैनिक आजादी के।

चिन्ता नहीं करेंगे तिल भर हार-जीत की,
हाल नहीं पूछेंगे कोई बर्बादी को।

जेना कि हम एहि सँ पहिनहुँ कहि चुकल छी, आरसी बाबूक कवि-मन घृणा केँ फेकि प्रेमक पक्ष लैत अछि, दुर्गुणक विरुद्ध सद्‌गुणकेँ प्रेरित करैत अछि आ सम्पूर्णतः मानवीय मूल्यक स्थापना तथा रक्षा मे विश्वास करैत अछि। आणविक स्पर्धाक युग मे कवि आरसी शांतिक संदेश दैत लिखैत छथि आ बुद्धक बुद्धत्व, महावीरक महावीरत्व एवं रामक रामत्वक रक्षाक कामना करैत छथि, जकरा लेल आत्मानुशासनक नितान्त आवश्यकता अछि-

गूँज रहा है अणुबम का विस्फोट भयानक,
धुआँ-धूल-अवसाद-घृणा से हवा भरी है।
पीती है हर साँस प्रदूषित घूँट घुटन की,
मानवता भयभीत, मृत्यु के द्वार खड़ी है।
बोधि-वृक्ष पर काल-कुठाराघात चढ़ा है,
महावीर की परम्परा पर बैठा रोगी।
कंचन-मृग के पीछे युगके राम चले हैं
कुशल सभ्यता-सीता की कैसे फिर होगी ?

आरसी बाबू सुयशक सौखीन कवि छलाह आ तेँ अपन कवितो मे सर्वत्र यशस्वी होयबाक प्रेरणा दैत रहलाह। एक ठाम ओ कहनहुँ छलाह जे संसारमे सभ किछु नश्वर होइछ, तेँ एहन कार्य करैत रहबाक चाही जाहि सँ यश प्राप्त हो-

इस पृथ्वी पर कौन अमर-पद पायेगा ?
यश-अपयश ही शेष एक रह जायेगा।

कवि आरसी प्रसाद सिंह देश, समाज आ विश्व-मानवताक कल्याणक हेतु कतहु सँ ज्ञानार्जनक कामनाक पक्षपाती छथि ओ अहिंसाक प्रेमी तँ छथि, मुदा एहन अंधविश्वासी नहि जे संसारक दृष्टि मे निर्वीर्य प्रमाणित भ' क' पछताय पड़नि। हुनक अनुसार केहनो परिस्थिति मे देशक स्वत्व आ शौर्य जीवित रहबाक चाही। स्वदेश, स्वाभिमान, स्वसंस्कार तथा स्वसंस्कृतिक रक्षकक रूप मे कोनो प्रकारक त्याग लेल तत्पर रहैत ओ कहैत छथि-

आत्मदान की माँग न होती, प्राप्ति न होती है बल से।
उसे न कोई ले सकता है किसी युक्ति, कौशल, छल से।

वह तो स्वयं प्रेरणा मन की, आत्मा की चिर वाणी है,
स्वेच्छा से देने वाला ही जीवन का बलिदानी है।

×× ×× ××

जन्मभूमि के लिए स्वर्ग-सुख, जीवन-दान करूँगा मैं
सुर-सेवा के कारण अर्पण अपने प्राण करूँगा मैं
ध्येय और पथ से मैं विचलित किंचित कभी न होऊँगा
जहाँ रहूँगा मैं स्वदेश का गौरव कभी न खोऊँगा

×× ×× ××

व्रती अहिंसा के यद्यपि हम, पर कायर निर्वीर्य नहीं,
सत्य- प्रेमकेप्रतिपालकहैं,किन्तुनहींदौर्बल्यकहीं।
हम सह सकते नहीं रुधिर में अपमानित ज्वर की ज्वाला,
हम पहनाते उछल-उछल कर स्वतंत्रता की जय माला।

कवि आरसी प्रसाद सिंह लोकतंत्रक समर्थक तँ छलाह, मुदा झूठ सम्पूर्ण क्रांति तथा झूठ सत्ता-परिवर्त्तन मे हुनक विश्वास नहिं छलनि। ओ परिवर्त्तनक अर्थ सत्ताक संस्कार में परिवर्त्तन बुझैत छलाह आ तेँ चाहैत छलाह जे बाह्य परिवर्त्तनक बदला मे आन्तरिक परिवर्त्तन हो। हुनक पाँती एहि विषय मे बहुत मार्मिक छनि-

नहीं चेतना में जबतक परिवर्त्तन होता,
तबतक रहती क्रांति सतह पर जनजीवन की,
आँधी आती और चली जाती है पल में,
रह जाती है कथा मनोहर आन्दोलन की।

×× ×× ××

शीर्षासन करने से उगते पाँव न सिर में
और नहीं आता है जीवन में परिवर्त्तन।
राज्य, धर्म, शासन-ये सारे वस्त्र मनुज के
बदले भी तो क्या ? अन्तर है वही अकिंचन।

×× ×× ××

बढ़ते ही जाते हैं शिशुपालों के नाखून,
चलता राजधानी में जयद्रथ का कानून,
गोकुल की गलियों में मछली की सड़ी गंध !

देशक लोकतांत्रिक वातावरण कोना सत्ताक अपराधीकरण तथा अपराधक राजनीतिकरण भ' जाइछ तथा 'बूथ-कंट्रोल' केर पद्धति सँ निर्वाचन भ' जाइछ, ताहि पर कठोर व्यंग्य करैत कवि लिखलनि अछि-

जीत गया दुःशासन, चीर-हरण निर्विरोध,
कुतर गये कौरव संविधान का सुवर्ण-बोध,
संशोधन करते हैं शकुनी गीता-प्रबंध !

आरसी बाबू अपन मृत्यु सँ पूर्वक पाँच-छौ वर्ष मे लगातार अपन सात टा पुस्तकक प्रकाशन करौलनि-रंजनीगंधा, युद्ध अवश्यंभावी है, जिस देश में हूँ, चाणक्य-शिखा, बदल रही है हवा, आस्था का अग्निकुंड आ भारत-सावित्री। 'पाँती राम के नाम' नामक हुनक अन्तिम काव्य-पुस्तक प्रेस मे मुद्रणाधीन छलनि, जकर प्रकाशन मरणोपरान्त संभव भ' सकलै। एहू सभ पुस्तकमे कवि आरसी बाबू देशक अतीतक प्रति गौरव, वर्त्तमान राजनीति सँ निराशा तथा भविष्यक प्रति आशावाद व्यक्त कयने छथि।

राष्ट्रवाद अन्त-अन्त धरि आरसी बाबूक कविताक आखर-आखर मे रसैत-बसैत रहलनि अछि। ओ जीवन भरि कोनो साहित्यिक वादक विवाद मे नहि फँसलाह तथा देश-प्रेम, राष्ट्रीय एकता आ मानवतावादक लेल चिन्तन, मनन तथा लेखन मे रत रहलाह। देशक राजनीति में बहल जातिवादक नारा आ अशिक्षितक बहुमतोक युग मे ओ कहैत रहलाह-

व्यक्ति का स्वातंत्र्य जब अज्ञान-मूर्च्छित है,
ढोंग है गणतंत्र, मानवता अरक्षित है!
भेंड़ हो या भेड़िया-क्या फर्क पड़ता है?
भीड़ के उन्माद का ही नाम जनता है!
स्वार्थ के नेतृत्व ने बहुमत उभारा है!
साथियो, आगे बढ़ो, ओझल किनारा है!

उदात्तता आरसी बाबूक कविताक आत्मा थिकनि आ तेँ हुनक राष्ट्रीय धाराक प्रत्येक कविता मे सर्वजनधन-संस्कारक एकल स्वरूपक वर्णन अछि। ओ एक राष्ट्रवाद मे विश्वास करैत छलाह आ धर्म अथवा वर्णक आधार पर सांस्कृतिक विखण्डनक विरोधी छलाह। हुनक एहि वैचारिक दर्शनक पक्ष मे हुनक 'भारतवर्ष' शीर्षक कविताक किछु पंक्ति केँ उद्धृत कयल जा सकैछ-

पृथ्वी का है मुकुट हिमालय,
भूमंडल का है सागर,

भारत की सीमा क्या कोई,
यह क्या किसी जाति का घर!
इस उपवन मे वर्ण-वर्ण के-
मुक्तकंठ खग चहकेंगे।
गीतों की लम्बी बाँहों में-
सारी दुनिया भर लेंगे
समता का आदर्श,
सत्य का कोमल स्पर्श न किसका है!
गंगा किसकी नदी नहीं है,
भारतवर्ष न किसका है!!

आरसी बाबू हिन्दी मे बाल-साहित्यो खूब लिखलनि। हिनक दस टा बालोपयोगी पुस्तक प्रकाशित छनि-चन्दामामा, *चित्रोंमेंलोरियाँ*, *ओनामासी*, *रामकथा*, *जादूकीवंशी*, *कागजकीनाव*, *बालगोपाल*, *हीरा-मोती*, *जगमगआ कलमऔर बन्दूक*। एक समय छल जहिया देशक विभिन्न प्रदेशक पत्र-पत्रिका मे हिनक बालोपयोगी रचना सभ छपिते रहैत छलनि। हिनक पाँच टा आओर बालोपयोगी पुस्तक एखन धरि अप्रकाशित छनि-*हिन्दीकीपहलीपुस्तक*, *रुनझुन*, *पंचमेल*, *रंगलीला* आ *बालकथा-संग्रह*। हुनक बाल-कविता मे बाल-मानसिकताक परिचय तँ भेटिते अछि, बालकक लेल दिशा-निर्देशो रहैछ। एक कविताक किछु पंक्ति उदाहरण-स्वरूप प्रस्तुत अछि-

पढ़ना भी है एक चीज ही,
उछल-कूद में मत बिसराओ!
ओ मस्ती की फौज रंगीली-
पढ़ो-लिखो तुम खेलो-खाओ!!

एक टा बाल-कविता मे ओ लिखने छथि-

चल बे घोड़े टिक-टिक-टिक,
इस घोड़े पर दौड़ लगाऊँ,
लंदन से पेशावर जाऊँ,
उस राक्षस-कन्या को लाऊँ!

बच्चा प्राय: आपस मे छोटो-छिन बात पर झगड़ा करय लगैछ आ जिद्दी भ' गेला पर माय-बापोक आदेशक अवहेलना क' दैछ। एहन बच्चाकेँ

कर्त्तव्यक बोध करबैत आरसी बाबू अपन एकटा बाल-कविता मे लिखैत छथि-

झगड़ो मत साथी से अपने
माँ-बापों से सदा डरो!
लड़ना बेशक बुरी चीज है,
नहीं किसी से कभी लड़ो!!

पढ़ो-लिखो .आनन्द करो,
उर में सुन्दर-से भाव भरो!
उतरो देव-दूत-सा जग में-
छोटों को भी प्यार करो!!

तुम मस्ती के जीव, अभी हाँ,
चिन्ता को मारो गोली!
देखो, नाखुश हों न तुम्हारे-
व्यवहारों से हमजोली!!

कवि आरसी प्रसाद सिंहक हिन्दी मे आधा दर्जन एकांकी नाटक सेहो प्रकाशित छनि-*टूटेहुएदिल, कलंक-मोचन, वैतरणीकेतीरपर, जबदुनिया अबोधथी, समझौता* और *पुनर्मिलन*। एहि मे सँ पाँच टा एकांकी सामाजिक और अंतिम एकांकी सांस्कृतिक भाव-बोधक अछि। प्रायः प्रत्येक एकांकी मे समाज-कल्याण आ देश-प्रेमक आवेश देखबा मे अबैछ। किछु एकांकी मे गीतक पुरना परम्पराक निर्वाह सेहो कयल गेल अछि, जेना-*जबदुनियाँअबोध थी*। ओहि नाट्कक आदिमानव नायक गबैत अछि-

जब भूख जोर से लगती है,
जब आग पेट में लगती है,
तब हो जाता हूं मैं विह्वल,
मैं मांस चाहता हूँ केवल।

हिनक छौ टा कथा-संग्रह प्रकाशित छनि-*पंचपल्लव, खोटासिक्का, कालरात्रि, एकप्यालाचाय, आँधीकेपत्ते* आ *ठढीछाया*। एहि सभ मे क्रमशः पाँच, नौ, बारह, दस आ एगारह टा कथा संगृहीत अछि। एहि कथा सभ मे आरसी बाबू युगीन विषय आ मानसिकताक चित्रण तँ करबे कयलनि अछि, भविष्यक विकास-मार्गक निर्देशन सेहो कयलनि अछि। अधिकतर कथा मे कविताक भाषा-शैलीक छाप सेहो स्पष्टतः देखबा मे अबैछ।

समीक्षाक क्षेत्र मे आरसी जीक एकहि टा पुस्तक प्रकाशित छनि-*कविवर सुमति :युगऔरसाहित्य।* ई पुस्तक 1981 ई० मे तारामंडल, पटना सँ प्रकाशित भेल छल। निष्कर्षत: कहल जा सकैछ जे आरसी बाबू मूलत: कवि छलाह आ तेँ हिन्दी साहित्यक इतिहासो हुनका उत्तर छायावादी युगक कविएक रूप मे प्रतिष्ठा देलक नि अछि।

❑

4

आरसी बाबूक गीति-चेतना

आरसी बाबू लिखलनि तँ बहुत किछु, मुदा हुनक मूल परिचय गीतकारेक रूप मे होइत छनि। मैथिली मे तँ हुनक पहिलो रचना गीते थिकनि, जकर शीर्षक छैक 'शेफालिका।' गेयता, लयबद्धता, यति-गतिमयता हुनक कविताक विशेषता छनि। गीति-चेतना हुनक प्राय: प्रत्येक छांदिक किंवा मैथिली कविता मे विद्यमान अछि आ ओ अपन गीतिधर्मिताक निर्वाह सतत करैत रहलाह अछि। *माटिकदीप* होअय अथवा *पूजाकफूल* अथवा *सूर्यमुखी*- हुनक प्रत्येक काव्य-संकलनक अधिकतर गीत पाठकक मन-प्राण केँ मोहि लैछ। माधुर्य हुनक गीत सभक मूल गुण थिकनि, ओना आन्दोलनी गीत सभ मे ओज गुण सेहो सम्पूर्णताक संग पाओल जाइछ। सरलता आरसी बाबूक स्वभाव छलनि, तेँ हुनक गीत सभमे सरलता आ सहजताक दिग्दर्शन होइछ। सामान्य कविता आ गीत मे एकटा अन्तर तँ होइते छैक जे गीत मे टेकक संग-संग अन्तरा सेहो होयबाक चाही, जकर निर्वाह आरसी बाबूक गीत सभ मे नीक जकाँ कयल गेल अछि। यथा-

मोन हमर शरत्-प्रात, प्राण हमर हरसिंगार,
झड़-झड़-झड़-झड़य सुमन, मह-मह-मह-मह पसार !
मन्द-मन्द मलय पवन
सुरभित उपवन वन-वन
मादक-मोहक प्रसाद
बाँटि रहल भुवन-भुवन
आँगन-आँगन सुबास, बहय सरस सुरुचि-धार,
मोन हमर शरत्-प्रात, प्राण हमर हरसिंगार !

(*सूर्यमुखी*)

सर्वविदित अछि जे हरसिंगार, सिँगरहार अथवा शेफालिका शरद ऋतुक फूल होइछ। ई सुगन्धित फूल माधुर्य सँ पूर्ण होइछ आ प्रात:काल होइत-होइत वातावरण केँ महमहबैत भूमि पर चूबि जाइछ। ई फूल एहन होइछ जे धरती

पर चूबियो गेलाक बाद देवता पर चढ़यबाक हेतु पवित्रे रहैछ। हरसिँगारक फूल एक-एक गाछक नीचा मे कतेको हजारक संख्या मे खसल भेटैछ जेना कि प्रत्येक नागरिककेँ पुष्प-प्रीति-भोजक लेल सार्वजनिक हँकार दैत होअय। आरसी बाबूक कवि एहि भावनाक उदात्तताकेँ अही गीत मे आगाँ व्यक्त करैत लिखने छथि-

जे अयवह आबि जाह,
बिनु मँगने लोढ़ै जाह,
आँचर-भरि गम-गम-
गमकैत गगन ओढ़ै जाह।
आइ पुहुप-प्रीति-भोज, सबकेँ सब ठाँ हँकार,
मोन हमर शरत्-प्रात, प्राण हम हरसिँगार!

आरसी बाबू 'वर्षा-उल्लास' शीर्षक गीत मे वर्षा ऋतुक परिवेशक उद्गार व्यक्त कयलनि अछि। एहि गीत मे एक दिस तँ पावसी प्राकृतिक विकासक सौम्य चित्र अछि आ दोसर दिस मनुष्यक मन-प्राण पर पड़ल ऋतुक प्रभावक वर्णन सेहो अछि। कवि कहैत छथि जे-

वर्षा ऋतु आयल पुनि, नाचि उठल मन-मयूर!
काजर-सन कारी रसवन्ती उड़ि गेल तूर!!
फेर हमर आँगन मे फूलि गेल नवकदम्ब,
लतरि गेल चारू दिस श्यामलता निरवलम्ब।
बिजुरी केर फूल खने हँसय, खने मुरझि जाय,
कजरी वन-चरय गाय लाख-लाख नील गाय।
धूरी पर झूमि रहल धरती केर धूर-धूर!
वर्षा ऋतु आयल पुनि, नाचि उठल मन-मयूर!!

एहि गीत मे छौ टा रूपक किंवा बिम्बक उपस्थापन करैत उपमा-उत्प्रेक्षा अलंकारक चमत्कार देखाओल गेल अछि। एकटा बिम्ब अछि जे कोनो व्यक्ति कलमी कटहरक गाछ रोपि क' परदेश चल गेल छल, जाहि मे वर्षा ऋतु मे अपूर्व-अतुलित फल लदि गेल छैक। ग्रीष्म ऋतु मे जे किसान अपना केँ आबा मे झुलसल अनुभव करै छल, तकरो मे वर्षा ऋतु एहन उत्साह भरि देलकै अछि जे ओ मकइ आ धानक बोआइ-रोपाइ लेल सक्रिय भ' गेल अछि। एहि दृश्य केँ देखि मानव-मानवक प्राण राजहंस-जकाँ भावुकतावश दूर-दूर धरि उड़य लागल अछि-

परदेशी रोपि गेल छल जे कलमी रसाल,
अपरुब फल ओहि मे बहार भेल बेमिसाल!
आबा मे ग्रीष्मक जरल-मुइल छल किसान,
चलल मगन खेत बाउग करय ले' मकइ-धान!
भावुक बनि प्राण राजहंस-जकाँ उड़य दूर!
वर्षा ऋतु आयल पुनि, नाचि उठल मन-मयूर!!

एही गीतक तेसर चरण मे कवि आरसी वीर रसक ओज गुणक परिचय दैत लिखैत छथि-

थिरकि-थिरकि उठल पयर, ताल पर उमंग-अंग,
गरजि रहल सघन गगन-बीच उच्च घन-मृदंग।
पावस-महीप करे बाजि गेल वज्र-शंख,
विजय-केतु फहरि उठल जनु असंख्य मोर-पंख।
बून-बान-झरी लगा देल सजल जलद-शूर!
वर्षा ऋतु आयल पुनि, नाचि उठल मन-मयूर!!

(*सूर्यमुखी*)

'चेतना-तरंग' शीर्षक गीतक रचयिता गीतकार आरसी प्रसाद सिंह वसंत ऋतुक उत्साह-उमंगक वर्णन करैत अघाइत नहि छथि। हुनक अनुसार वसंत ऋतु मनुष्यक हृदय प्राणमे उमंगक तेहन संचार क' दैछ जे लगैछ जेना स्वयं कामदेव मंच पर नर्तक किंवा नटक रूप मे नाचि रहल होथि। गीतक उद्धरण देखल जाय-

छूबि गेल आइ कोन चेतना-तरंग!
प्राण-प्राण मे सजीव भ' रहल उमंग!!
आइ मलय-वात-गात मातल रसराज,
कुंज-कुंज पुंज-पुंज गुंज भ्रमर-साज।
लजवन्ती लतिका मे जनमि रहल लाज,
आइ नै सोहाइ कोनो आँगन-घर-काज।
रंग-मंच पर उतरि गेल नट अनंग!
छूबि गेल आइ कोन चेतना-तरंग!!

वसन्त ऋतुक ई विशेषता होइत छैक जे मनुष्य मादकताक वशीभूत भ' भसिआय लगैत अछि किंवा आत्म-नियंत्रणक अभावक अनुभव करय लगैछ।

किछु एहने-सन स्थिति मे कवि आरसी अपन एहि गीतक अंतिम चरण मे लिखैत छथि जे-

अधरतिये चूबि रहल महुआ मधु-जोर,
अँजुरी-भरि गाबि रहल चैती धुन भोर !
कोइली कुहुकुहुक बोल, पपिहा पी-शोर,
रक्त मे जुआरि, रोम-रोम मे हिलोर !
भासल जा रहल पयर कत 'ककर संग !
छूबि गेल आइ कोन चेतना-तरंग !!

'उगैत सूर्य केँ प्रणाम' शीर्षक गीत मे कवि आरसी भिनसरकेँ जागृतिक काल कहैत छथि आ एहि बेला मे शयन-शय्या छोड़ि क' दैनिक कार्यक सम्पादन मे लगि जयबाक आह्वान करैत छथि-

चेतनाक लहरि उठल बोन-बाध गाम-गाम !
आउ आइ हम करी उगैत सूर्य कँ प्रणाम !!
भेल भोर भिनसर, आ-
एखनो धरि सूतल जे
कहू के अभागल अछि-
ओकरा-सन भूतल मे
अपने जँ पड़ल तँ किएक ने विधातो वाम !
चेतनाक लहरि उठल बोन-बाध गाम-गाम !!
(*सूर्यमुखी*)

आरसी बाबूक कवित्वक ई विशेषता थिकनि जे ओ अपन गीत मे मिथिलाक कृषि-संस्कृतिक परिचय नीक-जकाँ करौलनि अछि। अधिकतर गीत मे बिम्ब आ उपमेय-उपमान सेहो कृषि-क्षेत्रे सँ जुटाओल गेल अछि। उदाहरण-स्वरूप 'शस्य-गान' शीर्षक गीतक किछु पाँती प्रस्तुत अछि-

गोबर सँ गायक हम नीपल आँगन-दुआरि,
राखल हम अगतहिसँ घर, परिसर, पथ बहारि,
देवालय बनल गाय-महिषक बाड़ा-बथान !
आँगन मे हमर सुआपंखी गमकैत धान !!
(*सूर्यमुखी*)

'मनोरथ' शीर्षक गीत मे कवि आकांक्षा आ तृप्तिक मध्यक अन्तर केँ स्पष्ट कयलनि अछि। आवश्यकताक अनंतता पर सेहो प्रकाश देब कविक

उद्देश्य लगैछ एहि गीत मे। एहि गीतक एकटा चरणक किछु पाँती द्रष्टव्य अछि-

रूप-सागर डूब देलहुँ, एक मोती ले' ललायल,
किन्तु बारम्बार सितुआ, शंख, घोँघे हाथ आयल!
चिर दरिद्रक ई मनोरथ छल कि भोगब राज-वैभव,
भाग्य-किंशुक केर आ अभिलाष छल ऋतुराज-उत्सव!
हर सुमन पर मुग्ध, हर सौन्दर्य-प्रतिमा पर लोभायल!
रूप-सागर डूब देलहुँ एक मोती ले' ललायल!!

कवि आरसी प्रसाद सिंह कोनो साहित्यिक वाद-विवादक कवि नहि होइतो अपन कविताक रथ केँ समयक संग ल' चलबाक प्रयास करैत रहलाह। अपन 'आत्म-ज्योति' शीर्षक गीत मे कवि युगक किंकर्त्तव्यविमूढ़ताक स्थिति केँ उत्तम पुरुष मे चित्रित करैत लिखैत छथि-

धुआँ-जकाँ बन्न घरमे हम औनाइ छी!
जरितो ने छी आ मिझाइयो ने जाइ छी!!

* * * * * *

काँचक दुर्भेद्य पारदर्शी मकान हो
हवोक जत' नहि प्रवेश, निषेधक विधान हो
गोंग छी बताह, कात चारू बौआइ छी!
धुआँ-जकाँ बन्न घर मे हम औनाइ छी!!

* * * * * *

'डूबै' अछि देह मुइल सूर्यक प्रकाश मे
शीशा केर भीत छेदि आबै अइ पास मे
अपने प्रतिबिम्ब सँ अपनहि टकराइ छी!
धुआँ-जकाँ बन्न घर मे औनाइ छी!!

(सूर्यमुखी)

आजुक स्वार्थपूर्ण सम्बन्ध पर टिप्पणी करैत कवि कहैत छथि जे कल्हुका अपनो लोक आब आन बनि गेल लगैत अछि आ सोझाँ पड़ला पर कन्नी काटि क' विदा भ' जाइछ। 'मनकबात' शीर्षक गीत मे एही पीड़ा केँ व्यक्त करैत कवि आरसी लिखलनि अछि-

हमर बात मनक रहल आइ मने,
अहाँ फेरि क' मुँह चलल जा रहल छी!

नजरि कँ खसौने, नजरिसँ बचौने-
नजरिमे लहरि क' चलल जा रहल छी !!
(सूर्यमुखी)

एहन विद्रूपोक स्थिति मे कविक आपकता रुसैत नहि छनि आ ने मौने सधैत छनि। ओ बुझैत अछि जे प्रेम एकतरफा वस्तु नहि होइछ आ तेँ ओ आगाँ बढ़ि क' टोकैत कहैछ-

सुनू हे हमर मीत, गीतक विधाता,
रहत की जनम भरि मनोरथ कनैते ?
सुमरनीसमयकेरसंगोनछोड़य,
उमिरिबीतिजायतघड़ी-पलगनैते ?
धरा पर हमर बीन साँसक बजै अछि,
अहाँ मेघ-वन मे उड़ल जा रहल छी !
हमर बात मनक रहल आइ मने,
अहाँ फेरि क' मुँह चलल जा रहल छी !!
(सूर्यमुखी)

गीतकार कवि आरसी बाबू मिथिलाक बाढ़ि-समस्या पर सेहो गीत लिखलनि अछि, जाहि मे मिथिलांचलक बाढ़िक कारण भ' रहल दुस्थितिक वर्णन अछि। अपन 'सजल कुशल' शीर्षक गीत मे ओ लिखने छथि-

दाहर मे डूबि गेल कुशलक सब धान !
याचक बनि ठाढ़ अछि एकटंग मचान !!
भासि गेल मूल धन, लाभक की बात ?
चूल्हि कानि-कानि भरल, गील गीत-भात
बान्हि क' करेज गेल बान्ह पर बथान !
दाहर मे डूबि गेल कुशलक सब धान !!
कोसी खरिहान भेल, खेत बनल झील
बूड़ि गेल मकइ करे राशिफल-फसील
आँगन मे बागमती, गण्डकी दलान !
दाहर मे डूबि गेल कुशलक सब धान !!

'उछाह' शीर्षक गीत मे कवि असंतोष आ विचलनक प्रवृत्तिकेँ छोड़ि शांति तथा स्थिरता संधान मे लागल लगैत छथि। हुनका अनुसार ई सम्पूर्ण

संसार असार होइछ आ सभ ठाम तुष्टिक अभावक स्थिति अछि। ओ कहैत छथि जे दु:ख सहबाक शक्ति प्राप्त करबाक प्रयोजन अछि, एक ठाम सँ दोसर ठाम पड़यने कोनो लाभ नहि भेटत-

रहय दुख-दर्द मंगल-मूर्त्ति
तोहर स्नेह-ममता भ'।
दिह' सहबाक हमरा शक्ति-
जे मुसुकाय समता भ'।

विनश्वर कंठ सँ कुंठित-
अनश्वर गीत गायब की?
जगत सँ ऊबि क'जायब कत'?
पुनिहमपड़ायबकी?

'बागमतीक धारमे' शीर्षक गीतमे आरसी बाबू जीवनक तुलना बागमती नदीक सुखायल धार सँ कयलनि अछि। ओ कहैत छथि जे जहिना हुनक एरौत गामक बागमतीक धार केवल साओन मास मे उफनायल रहैत छनि आ बाद मे क्रमश: मरने भेल जाइछ, तहिना मनुष्यक जिनगी सेहो केवल जुआनी मे प्रफुल्ल रहैछ आ क्रमश: निराशाक दिस टघरल जाइछ। ओ चिन्तित भ' जाइत छथि जे हुनक जिनगीक नाव नहि जानि भसिआइत-भसिआइत कोन आ केहन घाट पर जा लगतनि। कवि एहि गीत मे सूफी कवि जकाँ कहैत छथि-

नाओ हमर लागत जा के जानय कोन घाट?
धारे-धार भसिआइत देखै' छी अपन बाट!
मोनपड़यलागलआइ
गामक परिवेश फेर।
एक मुइल नदी केर-
कारी झामर कछेर।
आँचरधरिउखड़लहर-फारकसीराककाट।
नाओ हमर लागत जा के जानय कोन घाट?
आइ आब एके बेर-
साओन मे मेघ-संग
बजबइ अछि बागमती
नाचि-नाचि जल-तरंग

दूनू दिस लागइ छै हरिअर-चुनरीक हाट !
नाओ हम लागत जा के जानय कोन घाट ?
(सूर्यमुखी)

'रूप-राशि' शीर्षक गीत मे कवि आरसी कोनो नायिकाक रूपक वर्णन सोझ-सपाट शैली मे कयलनि अछि। एहि गीतक विशेषता यैह छैक जे ओकर देह सँ बहराइत चाननक सुगन्धक घ्राणजन्य स्पर्श सँ कवि पुलकि उठल लगैछ। कवि एहि सुगंध-स्पर्शक मादकता पर मुग्ध होइत लिखैत छथि-

चानन-सन देह तोहर मलयागिरि-मान !
पुलकि-पुलकि उठल सुरभि छूबि हमर प्राण !!
हरियर तरु-पात साजि
जूमल ऋतुराज
पहिरि नव रसाल-बाल
मंजरीक ताज
मुरली-सन कंठ तोहर आखर अनुपान !
कान मे हिलोर दैत लेल हमर प्राण !!
कुंज-कुंज परिमल-
उड़बैत, पथ अबीर
झूमि रहल मातल मद-
मोद मे समीर-
किसलय-सन करतल सँ पाबि स्नेह-दान !
मोन हमर भीजि गेल रंग-रंगल प्राण !!
अन्त धरि दिगन्त केर-
फूल लाल-लाल
नाच-रंग, गीत-नाद
छंद राग, ताल
दर्पण-सन रूप तोहर सर्व-समाधान !
प्रतिबिम्बित सृष्टि-सहित मूर्त्त हमर प्राण !!

दैहिक अनुराग मे रंजित एहि रस-मय गीतक उत्स आध्यात्मिक अथवा आधिभौतिक थिकनि से प्रश्नक उत्तर देबाक लेल आरसी बाबू आब हमरा लोकनिक सोझाँ मे नहि रहलाह तेँ ई अपन मन मे बुझबाक अछि जे ओहि नायिकाक गाम केँ कवि वृन्दावन किए बुझलनि तथा ओ ओकर पयर तरक

भूमिकेँ गोकुल किएक कहलनि। आँखि केँ कालिन्दी कहब आ काजरकेँ रस-बाण बुझबाक अर्थ तँ शृंगार रसक प्रेमी पाठकक बुद्धि मे स्पष्ट भ' सकैछ, मुदा ओहो ई बुझबा मे अनेक प्रकारक मीन-मेषक मार्गी एवं वक्री स्वरूपक विश्लेषण करबाक हेतु विवश होयताह, से हमर मन-प्राण कहैये। एहि गीतक शेष भाग अछि-

हमरा ले' वृन्दावन-
भेल तोहर गाम
गोकुल-सन भेल-
तोहर पयर जाहि ठाम
कालिन्दी आँखि तोहर, काजर रस-बाण!
आकुल-व्याकुल-सन अछि ऊभ-चूभ प्राण!!
हिरनी-सन गेल हेरा-
कल्पना अबोध
पाछू तोहर धयने-
अनुराग अनुरोध
चुम्बक-सन छाँह तोहर अनुपम, अनजान!
बलजोरी खिंचल हमर मंत्र-मुग्ध प्राण!!
(सूर्यमुखी)

'हरिगीतिका' शीर्षक गीत मे कवि आरसी बाबू अभिनव विद्यापति कहयबा लेल सम्भवत: विद्यापतियेक एकटा गीत-शैलीक अनुकरण करैत छथि। 25 फरवरी, 1975 ईस्वीक लिखल ई रचना ई सोचबाक लेल विवश करैछ। जे विकसित नव-गीत-शैलीक एहि युग मे आरसी बाबू एहन गीत किएक लिखलनि, जे हुनक सम्पूर्ण आधुनिकता पर प्रश्न-चिह्न ठाढ़ क' दैछ। परम्परा विद्यापतिक 'माधव, हम परिणाम निराशा' केर शैलीक अछि। लगैछ जेना ई गीत राग इमन मे गयबा-योग्य अछि। ई राग भैरव थाटक अछि, तेँ लगैछ जेना कवि आस्था आ विश्वासक सूर्योदयी चेतनाक राग गाबि कहि रहल छथि-

कयल हृदय अनुमाने!

हे हरि, हे हरि, तोहर शरण धरि-
जायब फेर कि आने!!
मोनक मधुप तेजि की तोहर-
चरण-कमल मधु-पाने!

जगत्-जाल मे भरमि-भरमि क'-
मरत विषय-विष खाने !!
सीमर-फल सेबल शुक आसे,
सरस जुड़ायत प्राणे !
उड़ि गेल तूर दूर भेल सपना
मति मुरछल अगयाने !!
अपनाओल दुःखे दुख निरवधि,
निमिष भरिक सुख आसे !
जन्म कृतार्थ भेल, तव दर्शन-
पाओल कोनो बहाने !!
(सूर्यमुखी)

'अनुराधा' शीर्षक गीत सेहो विद्यापतियेक गीतक शैली मे लिखल गेल अछि। कृष्ण-भक्ति-परम्पराक एहि गीत मे अनुराधा नामक नायिका एकसरि कुंज-भवन मे उदास बैसलि अछि। राति पूर्णिमाक छैक, मुदा चन्द्रमा उगल नहि छथि। शंका छैक जेना चन्द्रमाक उदित होयबाक मार्ग मे कोनो राहुक बाधा होइक। कवि लिखैत छथि-

कुंज भवन मे बइसल रे एकसरि अनुराधा।
पूनम चान उगल नहि रे, कोन राहुक बाधा ।।
पथ हेरइत दिन बीतल रे घेरि आयल साँझे।
तिमिर पयोनिधि उमड़ल रे युग-लोचन माँझे ।।
पानि भरब केर गत भेल रे बेरो नहि भाने।
पुर-परिजन की भावय रे किछु ने अनुमाने ।।

गीतक शैली विद्यापतिक छनि, तेँ एकर संदर्भो ओही युगक छैक। नायिकाक समक्ष पानि दूरसँ अनबाक समस्या छैक, जे अन्हार मे सम्भव नहि लगैत छैक। एकटा आओर समस्या छैक जे ककरा माध्यमसँ प्रियतमकेँ पत्र पठाओल जाय। नायिका रवि-नन्दिनी अर्थात् यमुना नदीक ध्यान करैछ आ कुंज मे बैसलि चिन्तित अछि जे की कयल जाय। ओ कृष्ण पर विश्वास करैछ आ कहैछ जे ओकर मनोरथ कहियो पूर्ण भ' क' रहतैक। गीतक शेष भाग पठनीय अछि-

पीपर पात जकाँ चल रे, भय काँपत छाती।
ककरा कहु, ल' जायत से के प्रियतम पाती ।।

संग सखी सब तेजल रे पाहुन सम साँसे।
दरस लागि दृग बाँधल रे वैरिन गलफाँसे॥
रवि-नन्दिनि जग-वन्दिनि रे अनुभवन-समाने।
हमर विरह-दुख बूझल रे बाँचत नहि प्राणे॥
की मुँह ल' घर जायब रे कलसी रहु रीता।
माथे अजस बटोरल रे भेटल नहि मीता॥
हे हरि हे हरि हे हरि रे छोड़य नहि आशा।
एक दिन पुरत मनोरथ रे ई प्रेमक भाषा॥
(*सूर्यमुखी*)

सूर्यमुखी काव्य-संग्रह मे पाँच टा आओर गीत अछि। शीर्षक अछि 'अहाँ-सन अहीं छी', 'विरहमासा', 'प्रगति', 'दिलासा' आ 'मुइल सती'। अहाँ सन अहीं छी' मे कवि आरसी विद्यापतिक 'तोहर सदृश एक तुअ माधव, मन होइछ अनुमाने' बला गीतक सौष्ठव कें अपन शैली मे उतारबाक प्रयास कयलनि अछि। उदाहरण-स्वरूप किछु पंक्ति प्रस्तुत अछि-

अहाँ कँ कहू की? अहाँ सन अहीँ छी।
कहाँ छी अहाँ, हम जहाँके तहीँ छी।
लजा क' कमल पानि मे डूबि गेलै।
मिलाब' कोनो आँखि उपमा न अयलै॥
हमर मन-हरण, प्राण-मोहन अहीँ छी।
अहाँ कँ कहू की? अहाँ सन अहीं छी॥
हिमालय कही तँ निरानन्द पाथर।
कही सिन्धु जँ तँ सलिल खार ओकर॥
लगा साथ ली माथ, चानन अहीँ छी।
अहाँ कँ कहू की? अहाँ सन अहीं छी॥

'विरहमासा' सेहो बारहमासाक प्राचीन लोकगीत-शैली मे लिखल गेल गीत अछि। एहिमे पति परदेश सँ नहि अयलाक स्थितिमे विरहिनी अपन दु:स्थितिक वर्णन कयलक अछि। 'प्रगति' शीर्षक गीत सेहो लोके गीतक शैली मे लिखल गेल प्रचार-गीत अछि जे रेडियो द्वारा सम्भवत: ग्रामीण कार्यक्रमक लेल हुनका सँ लिखाओल गेल होयत। 'दिलासा' शीर्षक गीत मे कवि रौद लगने छाहरि मे बैसि जयबाक आग्रह करैत लगैत छथि-

रउद जँ लगइ-ए तँ छाहरि मे बैसि जाउ।
पँजबहि पयर आबि जाउ, सोझे घर पैसि जाउ।।
बहुत रास थाकल हयब
चलला सँ पथ कतेक।
आउ, आब हरियर भ'-
सुस्ता तँ लिअ' कनेक।
शीतल जल पान करू कुशल कहू, किछु सुनाउ।
रउद जँ लगइ-ए तँ छाहरि मे बैसि जाउ।।

'मुइल सती' शीर्षक गीत मे कवि अग्नि-कुंड मे झुलसि क मुइल सती केँ ढोइत प्रलयंकर शंकर केँ सम्बोधित करैत लिखैत छथि-

लाश ई कहाँ धरि अहाँ उठौने जायब यती?
कन्हा पर पड़ल मुइल बूझल ई छथि सती।
असह भेलनि अपमान
पथ न देखि कोनो आन
अग्नि-कुंड मे कूदि
स्वाहा क' देलनि प्राण
आब की तकै छी अहाँ? पागल सन भेल गती।
लाश ई कहाँ धरि अहाँ उठौने जायब यती।।

जेना कि पहिनहुँ कहल जा चुकल अछि, कवि आरसी प्रसाद सिंहक पहिल मैथिली गीत थिकनि 'शेफालिका' जकर संकलन हुनक प्रथम काव्य-संग्रह *माटिकदीप* मे भेल अछि। ई गीत ओहि युगक बड़ कलात्मक गीत छल आ एहि मे स्वयं शेफालिका भ्रमरीकेँ सम्बोधित करैत अपन परिचय दैत छैक-'मधुकरी, एहि विश्व-विपिनक हम सरल शेफालिका छी।' कोमल पद-विन्यास, सहजता, सरलता आ माधुर्यक कारण ई बहुत सफल तथा लोकप्रिय रहल अछि। एहि गीत मे पुष्पक व्यक्तीकरण भेल अछि। एकर एक टा अन्तरा छैक-

नित्य विहगावलि प्रभातहि
उठि हमर मृदु विरुद गाबय,
आबि दक्षिण देश सँ-
पावन पवन हमारा जगाबय।
चकित विकसित चौंकि जहिना
आँखि खुलि जाइछ हमर कल-

बाँधि किरणक पाश सँ-
नूतन तरणि हमरा जगाबय।
(माटिकदीप)

माटिकदीप नामक काव्य-संकलन मे कवि आरसी प्रसादक गीत-चेतनाक कोमलता सँ परिचित करयबाक लेल उपयुक्त कतेको गीत अछि। एक टा गीत कलियुग पर आधारित अछि, जकर किछु मन-मोहक पंक्ति स्मरण राखय-योग्य अछि-

निष्फल शास्त्र-पुरानक चर्चा,
नीक नाच-रंगक बट-खर्चा,
लाड़ि-चारि एकहि लड़ना सँ,
सब किछु बंटाधार करै अछि!
कलि कौतुक-विस्तार करै अछि!!

एहि गीतक एकटा दोसर चरण मे कवि सेठक शठता, चोर बजारीक सहज धंधा आ चोर-जुआड़ीक चलती पर व्यंग्य करैत लिखने छथि-

पुण्य बनल अछि चोर बजारी,
सेठ भेल शठ, चोर, जुआड़ी,
टीक कटौने भरिसक दमड़ी-
झा चामक व्यापार करै अछि!
कलि कौतुक-विस्तार करै अछि!!

एकटा अन्य गीत मे कवि आरसी कबीर दासक' जोलहा जल-बिच मरत पियासा' केर शैली मे अफसोस करैत छथि जे रसक समुद्र मे डूबल रहितो आइ लोक पिआसल रहि जयबाक हेतु विवश अछि तथा समयक सरितामे कमलक फूल जकाँ भसिआयल जा रहल अछि-

काल-स्रोतमे कमल फूल-सम
जीवन भासल जाय।
रस-समुद्रमे यद्यपि डूबल-
प्राण पियासल जाय।
(माटिकदीप)

पूजाकफूल काव्य-संकलनक एक टा गीत मे कवि आरसी आतुर प्रतीक्षाक चित्र प्रस्तुत करैत लिखलनि अछि जे कोना प्रतीक्षाक घड़ी मे राति

भरि घर मे दीप जरैत रहि जाइछ आ लगैछ जेना जागल मिलनातुर प्राणी बाट पर ओहिना नजरि टिकौने रहैछ। कविक शब्दावली अछि-

दीप जरैत रहि गेल राति भरि,
सगुन उचारैत राति भरि,
हम रहि गेलहुँ आँखि सँ अपनेक-
बाट बोहारैत राति भरि!

'रूप-वर्णन' शीर्षक गीत मे कवि एकटा नायिकाक चित्रण कयलनि अछि। रूप आ मस्तीक वर्णनक क्रम मे कवि पारम्परिक प्रतीक आ बिम्बक उपयोग करैत एहि लालित्यपूर्ण गीत मे लिखैत छथि जे-

तोड़ि देत कदली-तरु रे गजमत्त-समाज!
भय सँ पयर न बढ़वय रे लखि कटि-मृगराज!!

आरसी बाबूक गीति-चेतना ततेक जाग्रत आ व्यापक छनि जे ओ सभ प्रकारक गीत सँ मैथिली काव्य-साहित्यक पेटारी केँ भरलनि अछि। प्रेम-गीतक एक टा उदाहरण देखल जाय-

शपथ थिक हमर आब चलि आउ अपने!
मिलल प्रेम-पाती
धरकि गेल छाती
कि एखनो लगल अछि शनिक साढ़े साती।
ने लायब जँ साड़ी
पढ़त क्यो ने गाड़ी
कहत लोक एतबे, केहन छथि अनाड़ी,
मगर जँ अहाँ तँ फाटलो पटम्बर,
करब हम गुजर, आब चलि आउ अपने!

मिथिला आ एकर संस्कृतिक प्रशंसा मे आरसी बाबू कतेको विलक्षण गीत सभ लिखलनि अछि। मिथिला मे पान, मखान, दही आ विद्यापतिक गीतक महत्ता एवं लोकप्रियता केँ रेखांकित करैत एकटा गीत मे कवि लिखलनि अछि-

बाड़ी-बाड़ी लतरल पान
पोखरि-पोखरि फुटल मखान।

राह-बाट मे गुंजित होइछ-
विद्यापतिक मनोहर गान।
गाम-गाम मे धर्म-धुरंधर पढ़थि-पढ़ावथि मीन कि मेष!
धन्य-धन्य ई मिथिला देश!!

आरसी बाबू विभिन्न देवी-देवताक स्तुति मे सेहो किछु भक्ति-भावनापूर्वक गीत लिखलनि अछि। 'शक्ति-अर्चना' शीर्षक एक टा गीतक किछु पंक्ति द्रष्टव्य अछि-

त्रिपुर-सुन्दरी, अयि महेश्वरी!
सर्वभूत-निवासिनी!
मधुर-सुमधुर हासिनी!!

आरसी बाबू अपन मातृभाषाकेँ उचित सम्मान देअयबाक उद्देश्य सँ जन-जागृतिक लेल सेहो किछु कालजयी गीत सभ लिखलनि अछि। एहन गीत सभ बहुत लोकप्रिय अछि आ मिथिलावासी एहन गीत सभकेँ कंठस्थ राखि हिनक सारस्वत साधनाक भूरि-भूरि प्रशंसा करैत रहैत छथि। एकटा गीतक किछु पाँती प्रस्तुत अछि-

स्वस्थ राजनीति,
लोकतंत्र नीक हो,
संविधान मे विधान-
मैथिलीक हो!
आइ ई विदेह-भूमि माँगि रहल छै,
मैथिलीक क्रांति-पूत जागि रहल छै!

मातृभाषा मैथिली केँ उपेक्षित देखिक' गीतकार आरसी भावावेश मे आबि गेल छथि। ओ लिखैत छथि-

आबहु की रहतीह मैथिली बनल वन्दिनी?
तरुक छाँह मे बनि उदासिनी जनकनन्दिनी?
डंक बाजि गेल, आगि लंक मे लागि रहल अछि।
अभिनव विद्यापतिक भवानी जागि गेल अछि।

एक टा अन्य रचना मे कवि मातृभाषा मैथिलीक सामर्थ्यक परिचय करबैत ललकारि क' कहैत छथि जे मैथिलीक विकास मे आब कोनो बाधक बाधा उपस्थित नहि क' सकैत अछि, किएक तँ करोड़ोक संख्या मे मैथिली

भाषी लोक जागि गेल अछि आ अपन मातृभाषाक सम्मानक रक्षाक लेल कोनो प्रकारक त्याग-बलिदानक हेतु तैयार अछि। कविक शब्द अछि-

जहाँ बहै कोशी ओ कमला
गंडकीक जल-धारा।
ओ धरती नहि आब रहत हे-
कित्रहु मानव-कारा।
** * * * * **

बैसि कंठ पर क्यो बरजोरी
स्वर नहि दाबि सकै' अछि।
मूँग दररि सदिखन छाती पर-
मुँह नहि जाबि सकै' अछि।

❑

5

कवि आरसीक राष्ट्र-भावना

कवि आरसी प्रसाद सिंह एक टा प्रखर राष्ट्रवादी कवि रहलाह अछि। ओ राष्ट्र-वन्दनाक शैली मे कविता लिखैत रहलाह आ राष्ट्रक विभिन्न समस्याक समाधानक दिशा मे नेता तथा जनताकेँ जगबैत रहलथिन। हुनका भारतक सांस्कृतिक परम्पराक नीक ज्ञान छलनि आ ओ एहि उन्नत राष्ट्रीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर गर्व सेहो करैत छलाह। ओ अपन कतेको गीत-काव्य मे भारत केँ जन्मभूमि आ कर्मभूमिक रूप मे सम्बोधित करैत श्रद्धापूर्वक एहि पुण्य-भूमिक अर्चना-वन्दना कयने छथि। एक टा गीतक किछु पंक्ति उदाहरण स्वरूप द्रष्टव्य अछि-

हे जन्मभूमि भारत,
हे मातृभूमि भारत,
हे पुण्य-भूमि भारत,
हे कर्मभूमि भारत,
निशि-दिन अहाँक अविचल हम अर्चना करै' छी,
पावन अहाँक रूपक हम वन्दना करै' छी!
हम वन्दना करै' छी!!
(पूजाकफूल)

एहि गीतक एक टा दोसर चरण मे कवि स्वतंत्रताकेँ जन्मजात अधिकार मानैत छथि। कविक दृष्टिएँ स्वतंत्रताक रक्षाक लेल राष्ट्रीय एकताक आवश्यकता होइत छैक। ओ लिखैत छथि-

स्वाधीनता हमर अछि,
अधिकार जन्मजाते,
के दस्यु ल' सकै अछि-
एकरा उधार खाते,
हम ऐक्य-सूत्र बान्हल-
जन कोटि-कोटि वासी

युग आइ रचि रहल छी, नव अर्चना करै' छी!
हे जन्मभूमि भारत, हम वन्दना करै' छी!!

(पूजाकफूल)

देशक स्वतंत्रताक बाद जे आनन्दक वातावरण बनल छल आ नव-निर्माणक आशा जागल छल, तकरा व्यक्त करैत कवि आरसी अपन *माटिकदीप* नामक काव्य-संग्रहमे लिखने छथि जे-

नवीन युग नवीन जन
नवीन मुक्ति-बालिका
स्वतंत्र देशमे खिलल-
नवीन दीप-मालिका

कवि आरसीकेँ फूलक माला मे सेहो राष्ट्रीय एकता झलकैत छनि। कवि प्रकृति-प्रेमी छथि आ तेँ हिनका फूलक माला सेहो सांस्कृतिक एकताक डोर सँ गाँथल लगैत छनि। अनेकता मे एकताक आदर्शक भावना सेहो एहि कविता मे साकार लगैत अछि। कवि लिखने छथि-

फूल जे हो रंग-रूपक,
एक गजरा मे गँथल छी!
सात सुर-लय-ताल वान्हल,
रागिनी-रस मे रमल छी।
जँ पृथक् खर-पात छी तँ-
एक भय गुण-रज्जु हम छी।
भरि रहल अछि भावना-
हम एक छी, हम एक छी।

कवि आरसी देशक लेल आवश्यकता पड़ला पर आत्म-बलिदानक प्रेरणा दैत छथि। ओ कहैत छथि जे देशक स्वतंत्रताक रक्षा नागरिकक जीवनक परम लक्ष्य होइछ, तेँ देशक लेल बलिदानक हेतु तत्पर रहबाक चाही। कविक शब्द-साक्ष्य प्रस्तुत अछि-

भारत जननी माँगि रहल छथि-
आइ हमर बलिदान।
उठू-उठू हे भारत-प्रहरी,
जागू भारत-भक्त।

नहि स्वतंत्रता क्यो पबैत अछि-
बिना बहौने रक्त।
(पूजाक फूल)

कवि आरसी अपन *सूर्यमुखी* काव्य-संग्रह मे राष्ट्रीय एकताक जयघोष करैत छथि आ 'हम एक छी' शीर्षक कविता मे देशक भौगोलिक परिवेशक चर्चा करैत लिखने छथि-

आइ भारत-भारती-
सम्पूर्ण भारतवर्ष भरि मे-
भरि रहल अछि भावना-
हम एक छी, हम एक छी।
बाग जे कश्मीरसँ कन्या-
कुमारी धरि फुलल अछि,
वास जे मणिपूर सँ-
सौराष्ट्र धरि हमरा मिलल अछि
की मनोहर, शस्य श्यामल-
की तपोवन, पुण्य-पावन।
हर प्रकारक विहग-स्वर सँ-
चहचहाइत कुंज-कानन!
चिर विविधता-बीच अनुपम-
एकताकेँ साधने से-
क' रहल अछि घोषणा-
हम एक छी, हम एक छी।

कवि आरसी देशक उत्तर मे नगाधिराज हिमालय केँ राष्ट्रक प्रहरी मानैत छथि। कविक अनुसार देशकेँ तीन भाग सँ सुरक्षित रखने सागर देशक गौरव-गाथाक उद्गान क' रहल अछि आ मध्य भागक विंध्याचल पर्वत-शृंखला एकर पौरुष एवं शक्तिक बखान क' रहल अछि। स्वयं कविक शब्द मे देखल जाय-

देवता नगराज उत्तर मे-
जकर प्रहरी विराजय।
सिन्धु तीनू कात सँ-
गौरव-कथा-कविता सुनाबय।

मध्य मे गिरि-मेखला-
विंध्याटवी अछि शक्ति केन्द्रक,
भूमि मे लोटय जतय-
अभिमान सुरपालक सुरेन्द्रक।
क' रहल अछि मुक्ति कल-कल-
नाद जन-गण जागरण सँ-
सौम्य समता-साधना,
हम एक छी, हम एक छी।

(*सूर्यमुखी*)

कवि आरसी सांस्कृतिक राष्ट्रवादी कवि होयबाक कारणेँ देशक सांस्कृतिक एकताक मर्म केँ बुझैत छथि। ओ जनैत छथि जे अपन-अपन अधिकारक रक्षाक लेल हम भने आपसी लड़-झगड़ मे लागल रही, मुदा बाहरी तत्त्व सँ संघर्षक स्थिति मे सम्पूर्ण देश एकताबद्ध भ' जाइछ। कवि लिखैत छथि-

एक छी जीवन-मरण मे,
एकं हम धर्माचरण मे।
भिन्नता हो बाह्य जे से-
एक हम अन्तःकरण मे।
हम लड़ी-झगड़ी परस्पर-
जे अपन अधिकार खातिर,
घर अपन झाड़ी-बुहारी-
लोक मे व्यवहार-खातिर।
किन्तु, कोनो शत्रु सीमा -
लाँघि दुःसाहस करय जँ-
कोटि कंठक गर्जना :
हम एक छी, हम एक छी।
(*सूर्यमुखी*)

आरसी बाबू राष्ट्रीय जीवन मे चरित्रात्मक उज्ज्वलताक आग्रही छथि। हुनक विश्वास छनि जे कोनो देश चरित्रवान् नेतृत्वक बल पर प्रगति करैत अछि आ विकासक शिखर पर पहुँचैत अछि। अपन 'हमर देश जागल' शीर्षक कविता मे ओ एहि सत्यकेँ स्वीकार करैत लिखलनि अछि-

चरित्रेक बलसँ प्रगति पर बढ़ैए
चरित्रे विकासक शिखर पर चढ़ैए
न सोना, न दाना
न सेना-खजाना
चरित्रेक तप सँ हमर त्याग जागल।
हमर भाग जागल, हमर देश जागल ॥
(सूर्यमुखी)

कवि देशकेँ भ्रष्टाचार-मुक्त रखबाक लेल जनता मे जागृति चाहैत छथि। हिनक अनुसार जनता जँ सूतल किंवा अनवधान रहत तँ चोरक दल चोरी करब नहि छोड़ि सकत। लोकतंत्र मे जन-सामान्यक सजगता बहुत मूल्यवान होइत छैक। कवि 'जन-जागरण' शीर्षक कविता मे अपना केँ युग-प्रहरी कहैत लिखलनि अछि-

मारि ने सकबह कालजयी तोँ, पीबि अमृत रस-लहरी !
जागह देश हमर हे भारत, जगा रहल युग-प्रहरी !!
हमर देश तोँ सोच करह जुनि, उठह-उठह हे शाश्वत !
शुद्ध सनातन, सत्य चिरन्तन, अमर निकेतन भारत !!
(सूर्यमुखी)

'राष्ट्र-गीत' शीर्षक कवितामे कवि आत्म-स्मरणक शैली मे राष्ट्रक स्वत्वकेँ जगयबाक उपक्रम मे लागल लगैत छथि। ओ देशे सँ पुछैत छथिन्ह-

आइ जे उत्सव मधुर वितरण करै' छह !
आइ जे सबहक हृदय मे रस भरै' छह !
से कहह की देश तोँ सरिपहुँ हमर छह ?
सत्य की इतिहास मे तोँही अमर छह ?
कीर्त्ति तोरे स्वर्ण-अक्षर मे लिखल छह ?
पयर की तोरे मुकुट स्वर्गक पड़ल छह ?
की किरण सँ भेल चोन्हर आँखि हमरे ?
की कटल अछि मन-विहंगक पाँखि हमरे ?
की सनातन सत्य हमरा नहि सुझै अछि ?
की हमर परिवेश हमरे नहि बुझै अछि ?
देश हमरे आइ चीन्है अछि न हमरा ?
भेल अछि अनजान फूलक लेल भमरा ?

अपन 'निबोधन' शीर्षक कविता मे सेहो कवि देशक स्वत्व केँ जगयबाक

प्रयास कयने छथि आ एकरा गौरवमय प्राचीन इतिहासक स्मरण करबैत लिखने छथि–

क तोँ छलैँ, मोन तँ पारहिँ
हे प्रियप्राण स्वदेश!
पतने केँ उत्कर्ष बुझै' छैँ,
सौभाग्येकँ क्लेश!!
पार्थ-जकाँ तोँ मोहग्रस्त छैँ,
स्मृतिक भेल छौ नाश!
जीवन - समर - विमुख भ'-
भोगै छैँ कुंठा-संत्रास!!
आइ तोरा ले' चाही पौरुष,
पांचजन्य - उद्‌घोष!
तरल आगि जे भरय रुधिर मे-
लगन, शहीदी जोश!!
देशक माटि-पानि सँ उपजल
सफल ज्ञान-विज्ञान!
जाग, जाग ल' हमर देश तोँ-
पुरुष - पुरातन - प्राण!!
(*सूर्यमुखी*)

अपन 'देश पुरातन' शीर्षक कविता मे कवि आरसी आश्चर्य व्यक्त करैत कहैत छथि जे जतय राष्ट्रक लेल सर्वस्व समर्पण आ बलिदानक परम्परा छल, ओतय स्वार्थक जाल कोना पसरि गेल अछि। लगैछ जे रक्षके भक्षक भ' गेल होअय। एहि पीड़ाजनक स्थितिक वर्णन कवि एहि प्रकारेँ कयलनि अछि–

चारू कात अन्हार, आँखि मे-
भरि-भरि गेल धुआँ आ धूरा।
नेओक पाथर धँसल माटि मे-
जगमग-जगमग कलश-कँगूरा।
बाजैत-हँसैत चेतना जीबैत-
एकाएक भेलि नीरव-जड़।
देश मात्र भूगोलक सीमा-
मानचित्र भ' टँगल भीत पर।
(*सूर्यमुखी*)

कवि एहि रचना मे आगाँ प्रभुत्व-प्राप्त किंवा सिंहासनारूढ़ नेता लोकनिक छलछद्मपूर्ण आचरण पर व्यंग्य करैत लिखलनि अछि जे-

प्रभुता पाबि मोह-मद उपजल
सेवा - व्रती तपी योगी मे।
अन्तर किछु रहि गेल ने पूर्वक-
त्यागी, वर्त्तमान भोगी मे।
अक्षत, फूल प्रसाद चढ़ै अछि
एखनो मन्दिर मे व्यापारी।
घंटा-शंख बजाक' कीर्त्तन-
करै पुजेगरी छथि सरकारी।
पावनि, पर्व, रामधुनि, उत्सव
भोग-राग आ शोभा-यात्रा।
नाच-गान, गोष्ठी-जुलूस, रस-
रंग-समारोहक मधु-मात्रा।
सबटा अछि, तैयो ने किछु अछि,
मुइल जेना सत्यक प्रति निष्ठा।
प्रतिमा तँ अछि वैह, मुदा नहि-
भक्ति-भावना, प्राण-प्रतिष्ठा।
(सूर्यमुखी)

'विरोधाभास' शीर्षक कविता मे कवि आरसी सामाजिक-राजनीतिक विद्रूप पर चिन्ता व्यक्त करैत एहनो स्थितिकेँ देशक लेल दुर्भाग्यपूर्ण मानैत छथि आ कहैत छथि जे-

पुण्यवान केँ दुखिया देखल,
पापी जन्न केँ पाओल सुखिया!
गुणी व्यक्ति रहि जाथि उपेक्षित
तिकड़मबाज बनल अछि मुखिया!!
धूर्त्त-शिरोमणि सत्ताधारी,
त्यागक पाठ पढ़ै छथि ज्ञानी!
मूर्खक घर मे लक्ष्मी बइसलि-
पंडित-प्रवर दरिद्र, अमानी!!!

आरसी बाबू उनैस सय छत्तीसे सँ मैथिली मे कविता लिखब प्रारम्भ कयने

छलाह, तेँ अपन कतेको कविता मे देशक परतंत्रताक विरोध मे सेहो शंख-नाद कयने छथि। देश सँ विदेशी सत्ताधारी केँ भगयबाक हेतु स्वतंत्रता-सेनानीक आह्वान करैत ओ एक टा कविता मे लिखने छथि-

राति ई अन्हार,
मोसि करे छै पहाड़,
बाट-घाट अनचिन्हार,
रे जुआन, सावधान!
सावधान, महाप्राण!!

'हाक' शीर्षक कविता मे सेहो कवि आरसी परतंत्रताक बेड़ी तोड़बाक लेल स्वतंत्रता-सेनानी लोकनिक आह्वान कयलनि अछि। कवि कहैत छथि-

आइ देश मे मचल स्वतंत्रता - समर!
मातृभूमि-वीर बढ़ू फानि क' निडर!!
* * * * * *
आबि गेल शुभ मुहूर्त्त, पुण्य बलि-घड़ी!
दासताक तोड़ि दिअ' क्रूर हथकड़ी!!
कहू स्वतंत्र भ' क' रहत देश ई हमर!
मातृभूमि-वीर बढ़ू, फानिक' निडर!!
(सूर्यमुखी)

'राग भारू' शीर्षक कविता सेहो स्वतंत्रताक पूर्वक कविता थीक। एहि मे देशक स्वतंत्रताक लेल कविक मन-प्राण मे उठि रहल उफानक चित्रण कयल गेल अछि। किछु पाँती उदाहरण-स्वरूप देखल जाय-

कसमसा रहल भुजदंड हमर,
शोणित शरीर मे खौलि रहल।
तरुणाइ स्वदेशक अँजुरी मे-
भूगोल उठा क' तौलि रहल
* * * * * *
हम समर-पिपासित सैनिक छी
रण-ताण्डव करत हमर वाणी।
आदेश-प्रतीक्षा मे हम छी,
रण-घोष करू हे सेनानी।

शंका ने करू, निरंकुश हम-
लंका मे आगि लगा आयब।
स्वाधीन-चेतना-शक्ति-स्रोत-
जन-जन मे आइ जगा आयब
हम कालकूट पी लेब, हमर-
जँ मृत्युंजय सँ चिर नाता।
हम प्राण करब अर्पित हँसि क'
जँ मुक्त होथि भारत माता।

(सूर्यमुखी)

कवि आरसी देश मे ने ककरो भुखायल देख' चाहैत छथि आ ने ककरो गरीब-निरीह। ओ छुआछूतोक समस्या सँ पूर्णतः मुक्तिक कामना करैत छथि। उदाहरण द्रष्टव्य अछि-

हे स्वदेशक मीत, तोहर जीत मे हम
हारि अपनो बिसरि देबह संग निर्मम!
आइ जे हम एक छी, हम एक देशक
एक आत्मा छी अमर, नहि चर्च क्लेशक!
आइ ने क्यो नीच, ने क्यो रंग भूखल!
रहय ककरो दुख न, ककरो मुँह न सूखल!!

कवि राष्ट्रीय जीवन मे प्रत्येक व्यक्ति केँ आनन्दमय देखैत रहबाक आकांक्षी छथि। ओ आशा व्यक्त करैत छथि जे निराशाक मेघ निश्चित रूप सँ छँटतैक आ आशावादक प्रकाशक प्रसार सँ संतुष्ट सम्पन्न राष्ट्रीय वातावरण बनतैक। 'जन-जागरण' शीर्षक गीतक किछु पंक्ति द्रष्टव्य अछि, जाहि मे कवि देश सँ कहि रहल छथि-

दिन फिरतह तोरो निश्चित, ई अन्धकार ने रहतै।
ने रहतै घोर निराशा, ने कुंठा-कुत्सा सहतै।
बहतै कनक-किरण-धारा मे कलुष-कालिमा लोकक।
शोकक जयतै निशा, दिशा भ' जगमग जग आलोकक।
छह अतीत तोहर महिमामय, अद्भुत गौरवशाली।
नाचल छह तोरे आँगन मे लीलामय वनमाली।

❑

प्रकाशित पुस्तकक सूची

मैथिली

(1) *माटिकदीप* (काव्य-संकलन)
(2) *पूजाकफूल* (काव्य-संकलन)
(3) सूर्यमुखी (काव्य-संकलन)
(4) *मेघदूत* (संस्कृत सँ मैथिली मे अनुवाद)

हिन्दी

(1) *आजकल* (काव्य-संकलन)
(2) *कलापी* (काव्य-संकलन)
(3) *संचयिता* (काव्य-संग्रह)
(4) *आरसी* (काव्य-संग्रह)
(5) *जीवनऔरयौवन* (काव्य-संग्रह)
(6) *नईदिशा* (काव्य-संग्रह)
(7) *पांचजन्य* (काव्य-संग्रह)
(8) *द्वन्द्वसमास* (काव्य-संग्रह)
(9) *सोनेकाझरना* (काव्य-संग्रह)
(10) *कथा-माला* (काव्य-संग्रह)
(11) *नन्ददास* (खण्ड-काव्य)
(12) *संजीविनी*(खण्ड-काव्य)
(13) *आरण्यक* (खण्ड-काव्य)
(14) *उदय* (महाकाव्य)
(15) *कुँअरसिंह* (महाकाव्य)
(16) *प्रेमगीत* (गीत-संग्रह)
(17) *रजनीगंधा* (काव्य-संकलन)
(18) *युद्धअवश्यंभावीहै* (काव्य-संकलन)
(19) *मैंजिसदेशमेंहूँ* (काव्य-संकलन)
(20) *चाणक्य-शिखा* (प्रबंध-काव्य)

(21) *बदलरहीहैहवा* (काव्य-संग्रह)
(22) *आस्थाकाअग्निकुंड* (काव्य-संग्रह)
(23) *भारत-सावित्री* (खण्ड-काव्य)
(24) *पाँतीरामकेनाम* (काव्य-संग्रह)
(25) *पंचपल्लव* (कथा-संग्रह)
(26) *खोटासिक्का* (कथा-संग्रह)
(27) *कालरात्रि* (कथा-संग्रह)
(28) *एकप्यालाचाय* (कथा-संग्रह)
(29) *आँधीकेपत्ते* (कथा-संग्रह)
(30) *ठंढीछाया* (कथा-संग्रह)
(31) *चन्दामामा* (बाल साहित्य)
(32) *चित्रोंमेंलोरियाँ* (बाल-साहित्य)
(33) *ओनामासी* (बाल साहित्य)
(34) *रामकथा* (बाल साहित्य)
(35) *जादूकीवंशी* (बाल साहित्य)
(36) *कागजकीनाव* (बाल साहित्य)
(37) *बाल-गोपाल* (बाल साहित्य)
(38) *हीरा-मोती* (बाल साहित्य)
(39) *जगमग* (बाल साहित्य)
(40) *कलम और बन्दूक*
(41) *कविवरसुमति : युगऔरसाहित्य* (समीक्षा)
(कविक तीस सँ अधिक पुस्तक एखनो अप्रकाशित अछि)

संदर्भ-ग्रंथ

(1) *महाकवि आरसी अभिनन्दन-ग्रंथ*

(2) *कविआरसीकीकाव्य-साधना* (लेखक : प्रताप साहित्यालंकार)

(3) *कवि आरसी प्रसाद सिंह : कृतित्व और व्यक्तित्व*
(लेखक डॉ० शीलधर सिंह)

(4) *कवि आरसी प्रसाद सिंह : व्यक्तित्व और कृतित्व*
(लेखक : डॉ० परमानन्द मिश्र)

(5) मासिक पत्रिका दृष्टि केर आरसी विशेषांक

(6) साप्ताहिक पत्रिका *प्रगति* केर आरसी विशेषांक

(7) साप्ताहिक पत्रिका *बिहारडाक* केर विशेष अंक

(8) *मिथिलामिहिर* साप्ताहिक पत्रिकाक कतेको अंक

(9) बिहार हिन्दी साहित्य-सम्मेलनक मुखपत्र : *साहित्य*

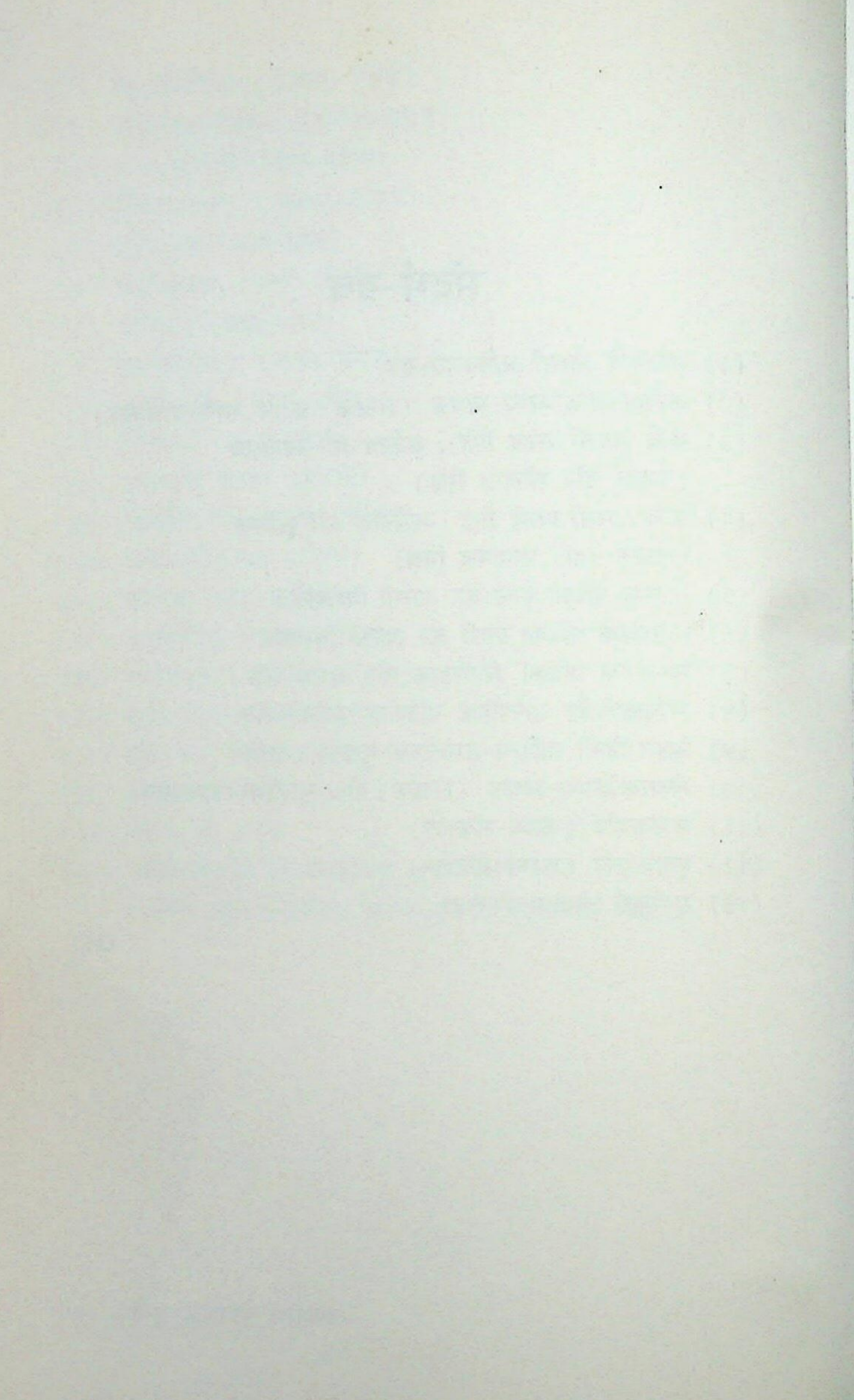
(10) *बिहारकीकाव्य-साधना* (लेखक : प्रो० मुरलीधर श्रीवास्तव)

(11) *माटिकदीप* (काव्य-संकलन)

(12) *पूजाकफूल* (काव्य-संकलन)

(13) *सूर्यमुखी* (काव्य-संकलन)

❑❑





आरसी प्रसाद सिंह (जन्म : 19 अगस्त 1911 इ.; निधन : 15 नवंबर 1996 इ.) अर्थात् मैथिली एवं हिन्दी मे समान अधिकारपूर्वक लिखनिहार राष्ट्रवादी कवि। प्राकृतिक सौन्दर्यक शब्द-चित्रकार। सरल स्वभाव एवं उत्तम आचार-विचारक संपन्नता सँ परिपूर्ण उत्तरछायावादी संस्कारक कवि। मूलतः गीतकार, ओना लिखबाक लेल तँ हिन्दी मे महाकाव्यो लिखलनि। प्रेम, करुणा, आत्मीयता आदि मानवीय मूल्यमत्ताक पक्षधर कवि। मातृभाषा मैथिली आ राजभाषा हिन्दीक प्रति अपार स्नेह कें अभिव्यक्त कयनिहार आपादमस्तक कवि। आजीवन मसिजीवी व्यक्तित्व। अक्खड़ कलमधर।

कवि आरसी वस्तुतः भारतीय साहित्यक निर्माता छलाह आ मैथिली एवं हिन्दी मे हिनका द्वारा रचल गेल व्यापक साहित्य-संसार अनंत काल धरि अगिला पीढ़ी कें प्रेरणा प्रदान करैत रहत। ओ आजीवन एतेक लिखैत आ छपैत रहलाह कि कहल कठिन छल जे हाथ सँ लिखैत छथि अथवा मशीन सँ। यद्यपि हिनक कविताक मुख्य विषय प्रकृति आ प्रेम छल, मुदा सत्य तँ ई अछि जे हिनक लेखनी कोनो विषय कें अस्पृश्य नहि बुझलक। मानवतावाद आ राष्ट्रवाद सेहो अंत-अंत धरि हिनक काव्य-रचनाक प्रमुख विषय बनल रहल। युवा वर्गक उत्साह-उमंग, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, आध्यात्मिक गौरव-बोध, मातृभाषा-प्रेम, मैथिली आंदोलन आदि विषय पर सेहो आरसी बाबू खूब लिखलनि।

मैथिली-हिन्दी भाषा मे आरसी प्रसाद सिंहक प्रकाशित पुस्तकक संख्या कम सँ कम सत्तरि अछि, जाहि मे कविताक अतिरिक्त कथा, बाल साहित्य, निबंध आदि सेहो अछि। मैथिली में हिनक तीन टा काव्य संकलन प्रकाशित अछि-*माटिक दीप, पूजाक फूल* आ *सूर्यमुखी*। ई कालिदासक *मेघदूत* नामक पुस्तकक अनुवाद सेहो मैथिली मे कयने छलाह। *सूर्यमुखी* काव्य संग्रह पर हिनका साहित्य अकादेमीक पुरस्कार प्राप्त छनि।

एहि पुस्तिकाक लेखक **मार्कण्डेय प्रवासी** सेहो मूलतः गीतकार-कवि। *अगस्त्यायनी* महाकाव्य पर 1981 केर साहित्य अकादेमी-पुरस्कार प्राप्त कवि। पटनासँ प्रकाशित दैनिक *आर्यावर्त* केर पूर्व संपादक। मैथिली-हिन्दीक कतेको पत्र-पत्रिकाक नियमित स्तंभ-लेखक। एगारह टा पोथियो मैथिली-हिन्दी मे प्रकाशित।

ISBN 81-260-2052-0

मूल्य : पच्चीस रुपये